जरिए कोई भी संदेश बहुत सी जगहों पर एक साथ पल भर में ही प्रसारित कर दिया जाता है। वायरलेस का प्रयोग अधिकतर पुलिस और सेना द्वारा किया जाता है।

मोबाइल फोन

गाँव, शहर, कस्बा हर जगह के लोग आजकल मोबाइल फोन से परिचित हैं। दूर-संचार का यह सस्ता, सुलभ और सुविधाजनक साधन सुदूर गाँवों में भी इस्तेमाल किया जा रहा है। प्रारम्भ में यह केवल अमीर लोगों के हाथों की शोभा हुआ करता था। मोबाइल फोन रखना हैसियत की निशानी माना जाता था। परन्तु दूर-संचार क्रांति ने इसे हर जगह, हर हाथ तक पहुँचा दिया। आजकल किसान, मजदूर, रिक्शे और खोमचे वालों को भी मोबाइल फोन से बात करते हुए देखा जा सकता है। यहाँ तक कि बिना पढ़े-लिखे लोग भी मोबाइल फोन पर बेझिझक बात कर लेते हैं।

चित्र 13.12 : मोबाइल फोन

नई-नई तकनीकों की ही देन है कि आजकल मोबाइल फोन केवल बात करने का साधन मात्र नहीं रहा। इसमें दुनिया की कई तरह की सुविधाएँ एक साथ सुलभ हो रही हैं। टॉर्च और घड़ी की सुविधा मोबाइल फोन में होने की वजह से इन चीजों का इस्तेमाल बहुत कम हो गया है। खासकर घड़ी बनाने वाली कम्पनियों का अस्तित्व संकट में पड़ गया है। मोबाइल फोन में कैमरे की सुविधा भी है, जिससे फोटो खींच सकते हैं, और वीडियो भी बना सकते हैं। मोबाइल फोन से एफ.एम. रेडियो सुन सकते हैं। गाने सुन सकते हैं आवाज और की गई बातचीत भी टेप कर सकते हैं। इतना ही नहीं, अब तो मोबाइल फोन पर इंटरनेट की सुविधा भी है। इंटरनेट की सुविधा होने से सारी दुनिया मानो अपनी मुट्ठी में आ गई है। इससे आप ई-मेल भेज सकते हैं। फेसबुक चला सकते हैं। फिल्में देख सकते हैं। यहाँ तक कि घर बैठे रेल और बस के टिकट भी बुक करा सकते हैं। बैंक से लेन-देन कर सकते हैं। बिजली, पानी के बिल जमा करा सकते हैं। गैस की बुकिंग करवा सकते हैं। अब तो मोबाइल फोन से ही लोग कई तरह की चीजों को खरीदने और बेचने का काम भी कर रहे हैं। कुल मिलाकर मोबाइल फोन आधुनिक युग का एक ऐसा अजूबा है, जिसने सारी दुनिया तक आपकी पहुँच बना दी है।

इंटरनेट

आज इंटरनेट आम जरूरत की चीज बन गया है। संचार के क्षेत्र में इंटरनेट एक बड़ी क्रांति है। इंटरनेट से पूरी दुनिया जैसे हमारी मुट्ठी में सिमट आई है। इसके जरिए हमें कोई भी जानकारी पलक झपकते मिल सकती है। दुनिया का कोई भी विषय हो, उसकी जानकारी हम इंटरनेट से ले सकते हैं। कोई भी काम इससे सीख सकते हैं। इससे किताब पढ़ सकते हैं। खरीददारी कर सकते हैं। कभी शहरों में रास्ता भटक जाएँ, तो इसके माध्यम से सही रास्ता खोज सकते हैं। एक-दूसरे से विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह कि इसे हम घर बैठे या मोबाइल फोन के जरिए चलते-फिरते भी संचालित कर सकते हैं।

चित्र 13.13 : इंटरनेट

देश के विकास में दूर-संचार का महत्त्व

दूर-संचार ने देश के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन को काफी गतिशील और सरल बना दिया है।

टेलीफोन, वायरलेस और मोबाइल फोन ने शासन-प्रशासन चलाने और कानून व शांति व्यवस्था बनाए रखने के काम को काफी आसान बना दिया है।

इंटरनेट और मोबाइल फोन से उद्योग तथा व्यवसाय चलाने में बहुत सहयोग मिलता है।

किसी तरह की दुर्घटना होने पर या प्राकृतिक आपदा के समय मोबाइल फोन तथा टेलीफोन की सुविधा होने से पीड़ितों को तत्काल सहायता मिल जाती है।

हम अपनी बात या संदेश दुनिया के किसी कोने में बैठे किसी भी व्यक्ति तक पलक झपकते पहुँचा सकते हैं।

घर बैठे रेल, बस और हवाई जहाज के टिकट बुक करा सकते हैं।

रेडियो, टेलीविजन और सिनेमाघरों से प्राप्त होने वाले मनोरंजन का लाभ अब घर बैठे या रास्ता चलते मोबाइल फोन के जरिए मिल रहा है।

मोबाइल फोन होने से ग्रामीण जीवन भी काफी सरल, सुगम और सुविधाजनक हो गया है।

जंगल, पहाड़, बीहड़, रेगिस्तान जैसे दुर्गम स्थानों पर मुसीबत में फँसा व्यक्ति मोबाइल फोन के जरिए तुरन्त मदद पा सकता है।

पाठगत प्रश्न 13.5

1. **सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए –**

   (मारकोनी, ग्राहम बेल, फोटो, पहुँचाना)

   (क) संचार का मतलब है, अपनी बात दूसरों तक .... ।

   (ख) टेलीफोन का आविष्कार .... ने किया था।

   (ग) वायरलेस का आविष्कार .... नाम के एक वैज्ञानिक ने किया था।

   (घ) मोबाइल से .... भी खींच सकते हैं।

आपने क्या सीखा

परिवहन के साधनों को तीन वर्गों में बाँट सकते हैं थल परिवहन, जल परिवहन और वायु परिवहन।

थल परिवहन सड़क और रेल मार्गों द्वारा संचालित होता है।

सड़क मार्ग द्वारा पहाड़, पठार, मैदान, मरुस्थल, ऊँची-नीची, ढालू जमीन तथा बीहड़ किसी भी जगह तक माल और यात्रियों को पहुँचाना आसान है।

हमारे देश में सड़कों की कुल लम्बाई लगभग 33 लाख कि.मी. है।

भारत में अभी कुल 77 राष्ट्रीय राजमार्ग हैं, जिनकी कुल लम्बाई लगभग 70935 किमी. है।

राष्ट्रीय राजमार्ग राज्य की राजधानियों, बड़े शहरों और पत्तनों को आपस में जोड़ते हैं। ये देश को पड़ोसी देशों- म्यांमार, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान और तिब्बत से भी जोड़ते हैं।

प्रांतीय राजमार्ग जिला मुख्यालयों और मुख्य शहरों को जोड़ते हैं।

जिले की सड़कें जिले के विभिन्न भागों को राष्ट्रीय राजमार्गों और प्रांतीय राजमार्गों से जोड़ती हैं। साथ ही, उन जगहों से भी जोड़ती हैं, जहाँ रेलमार्ग हैं।

गाँवों की सड़कें विभिन्न गाँवों को जिले की मुख्य सड़कों से जोड़ती हैं।

रेल परिवहन की शुरुआत हमारे देश में सन् 1853 में हुई।

सबसे पहले मुम्बई से ठाणे के बीच रेल लाइन बिछाई गई थी।

भारतीय रेल का एशिया में पहला और विश्व में चौथा स्थान है।

भारतीय रेल में लगभग 16 लाख लोग कार्यरत हैं।

भारतीय रेल केन्द्र सरकार के अधीन है। इसके सुचारु संचालन के लिए पूरे देश को 16 रेल मंडलों में बाँटा गया है।

मुम्बई, नई दिल्ली, कोलकाता और लखनऊ जैसे कुछ बड़े शहरों में मेट्रो रेल सेवा का संचालन किया जा रहा है।

अब देश में बुलेट ट्रेन चलाने की भी योजना है। ये ट्रेनें बहुत तेज गति से चलेंगी व अधिक सुविधाजनक होंगी।

जल परिवहन आवागमन का सबसे सस्ता, सुगम और पुराना साधन है।

आंतरिक जल मार्ग पर नाव, मोटरबोट तथा स्टीमर और समुद्री जल मार्ग पर स्टीमर व जलयान चलाए जाते हैं।

हमारे देश में समुद्री जलमार्गों पर 12 बड़े और 148 छोटे बंदरगाह हैं।

भारतीय जलयान दुनिया के सभी समुद्री मार्गों पर चलते हैं।

वायु परिवहन के रूप में हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर का संचालन किया जाता है।

हमारे देश में वायु परिवहन का विकास 1920 से प्रारम्भ हुआ।

देश के भीतरी भागों में विमानों का संचालन इंडियन एयरलाइन्स द्वारा किया जाता है। इंडियन एयरलाइन्स का नाम बदलकर अब इंडियन कर दिया गया है।

लम्बी दूरी के अंतर्राष्ट्रीय वायु मार्गों पर विमानों का संचालन एयर इंडिया द्वारा किया जाता है।

पवन हंस हेलीकॉप्टर लिमिटेड द्वारा विभिन्न कम्पनियों, राज्य सरकारों, सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों को हेलीकॉप्टर की सेवाएँ उपलब्ध करायी जाती हैं।

हमारे देश में सहारा एयरवेज और जेट एयरवेज जैसी कई निजी वायु सेवाएँ भी संचालित हो रही हैं।

भारत में 12 अंतर्राष्ट्रीय और 20 से अधिक राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं।

टेलीफोन, वायरलेस और मोबाइल फोन दूर-संचार के प्रमुख साधन हैं।

आजकल घड़ी, टॉर्च, कैमरा, रिकार्डिंग और इंटरनेट जैसी तमाम सुविधाएँ मोबाइल फोन में एक साथ मिल रही हैं।

इंटरनेट का आना संचार के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति है। इससे हमें घर बैठे सारी जानकारी मिल जाती है।

पाठांत प्रश्न

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए –

(क) जल मार्ग पर चलने वाले साधनों को .... परिवहन के साधन कहा जाता है।

(वायु / जल / थल)

(ख) पैसेन्जर गाड़ी अपने मार्ग के हर छोटे-बड़े .... पर रुकती है।

(कस्बे / गाँव / स्टेशन)

(ग) मेट्रो रेल .... के अंदर आवागमन की सुविधा के लिए चलाई जाती है।

(गाँव / शहर/ सुरंग)

(घ) .... वह स्थान हैं, जहाँ समुद्री जहाज रुकते हैं और उनमें माल चढ़ाया-उतारा जाता है। (बंदरगाह / आरामगाह / चारागाह)

(ङ) जल मार्ग .... की देन हैं, जिनके निर्माण पर कोई खर्च नहीं करना पड़ता।

(विज्ञान / प्रकृति / सरकार)

(च) सन् 1992-93 में .... का विलय इंडियन एयरलाइन्स में कर दिया गया।

(वायुदूत / पवन हंस / एयर इंडिया)

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) परिवहन को कौन से तीन वर्गों में बाँटा गया है?

....

(ख) सड़क और रेल परिवहन में ज्यादा पुराना कौन है?

....

(ग) प्रांतीय राजमार्गों के निर्माण, रख-रखाव और मरम्मत की जिम्मेदारी किसकी है?

....

(घ) भारतीय रेल किसके अधीन है?

....

(च) भारत में बड़े बंदरगाह कितने हैं?

....

(छ) हमारे देश में कितने अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं?

....

(ज) टेलीफोन का आविष्कार कब और किसने किया?

....

(झ) बी.एस.एन.एल. का पूरा नाम लिखिए-

....

3. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए–

(क) मेट्रो रेल समुद्र के किनारे-किनारे चलाई जाती है। ( )

(ख) सड़क मार्ग पर माल की ढुलाई अधिकतर ट्रकों के माध्यम से होती है। ( )

(ग) भारतीय रेल का एशिया महाद्वीप में पहला स्थान है। ( )

(घ) बंदरगाह वह स्थान है, जहाँ रेलगाड़ी से यात्री चढ़ते-उतरते हैं। ( )

(ङ) वायरलेस का प्रयोग अधिकतर पुलिस और सेना द्वारा किया जाता है। ( )

4. सही मिलान कीजिए :

रेल	वायु परिवहन
स्टीमर	दूर संचार
ब्रॉड गेज	थल परिवहन
रेल मंडल	जल परिवहन
अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे	बड़ी रेलवे लाइन
टेलीफोन	बारह
हेलीकॉप्टर	सोलह

5. मोबाइल फोन किस-किस काम आता है, विस्तार से लिखिए।

....

....

....

....

....

आइए, करके देखें

- अपने बड़े-बुजुर्गों के पास बैठें और बातें करें। उनसे पूछें, जब गाँवों में सड़क और टैम्पो आदि की सुविधा नहीं थी, तब किसी के अचानक बीमार हो जाने पर या दुर्घटना हो जाने पर उसे अस्पताल तक पहुँचाने के लिए क्या-क्या तरीके अपनाए जाते थे।
- उनसे यह भी पूछें कि जब टेलीफोन या मोबाइल फोन नहीं थे, तब घर में कोई घटना होने या किसी के मर जाने पर रिश्तेदारों तक संदेश कैसे पहुँचाए जाते थे। उसमें क्या-क्या कठिनाइयाँ आती थीं।
- बातचीत के आधार पर जो भी जानकारियाँ मिलें, उन्हें अपनी कॉपी पर लिखें। उस समय की कठिनाइयों और आज की सुविधाओं की तुलना करें।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

13.1 (क) थल परिवहन (ख) सड़कों
(ग) राजमार्गों (घ) उत्पाद

13.2 (क) 1853 (ख) केन्द्र सरकार
(ग) 16 (घ) शहर

13.3 (क) गंगा, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी आदि (ख) कोलकाता, हल्दिया आदि
(ग) नाव, स्टीमर आदि (घ) स्वेज नहर, उत्तमाशा अंतरीय मार्ग आदि

13.4 (क) इंदिरा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा, छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा आदि
(ख) मुम्बई-मंगलौर-चेन्नई, चेन्नई-हैदराबाद-दिल्ली आदि

13.5 (क) पहुँचाना (ख) ग्राहम बेल
(ग) मारकोनी (घ) फोटो

पाठांत प्रश्न

1. (क) जल (ख) स्टेशन (ग) शहर
(घ) बंदरगाह (ङ) प्रकृति (च) वायुदूत

2. (क) थल परिवहन, जल परिवहन और वायु परिवहन
(ख) सड़क परिवहन (ग) राज्य सरकार की
(घ) केन्द्र सरकार के (च) 12
(छ) 12 (ज) 1876 में ग्राहम बेल ने
(झ) भारत संचार निगम लिमिटेड

3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✗ (ङ) ✓

4. रेल – थल परिवहन
स्टीमर – जल परिवहन
ब्रॉड गेज – बड़ी रेलवे लाइन
रेल मंडल – सोलह
अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे – बारह
टेलीफोन – दूर संचार
हेलीकॉप्टर – वायु परिवहन

14

जनसंख्या विस्फोट और जनसंख्या नियंत्रण

जनसंख्या के हिसाब से भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। पिछली सदी में भारत की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। जनसंख्या बढ़ने की यह रफ्तार अब भी जारी है। जनसंख्या अधिक होने से कई परेशानियाँ भी पैदा हो जाती हैं। सामाजिक भी, आर्थिक भी और पर्यावरण सम्बन्धी भी।

जनसंख्या बढ़ने का सीधा सम्बन्ध जन्मदर बढ़ने से है। जन्मदर बढ़ेगी और मृत्युदर कम होगी, तो जनसंख्या बढ़ेगी। हमारे देश में भी यह हुआ है। जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ हमारे देश में इससे जुड़ी एक और समस्या भी सामने आई है। वह है, पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की संख्या कम होते जाना।

देश में जनसंख्या बढ़ने की रफ्तार कम रहे और जीवन की गुणवत्ता बढ़े, इसके लिए हमारी सरकार ने राष्ट्रीय जनसंख्या नीति बनाई है। जनसंख्या के बढ़ने की रफ्तार कम करने के लिए कई उपाय भी अपनाए जाते हैं। ये उपाय सरकार भी अपनाती है और लोग भी।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- जनसंख्या विस्फोट को परिभाषित कर सकेंगे;
- जनसंख्या बढ़ने के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों की व्याख्या कर सकेंगे;
- जन्मदर और मृत्युदर का अर्थ बता सकेंगे;
- लिंग अनुपात की गणना कर सकेंगे;
- हमारे देश में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की संख्या घटने के कारण बता सकेंगे;
- जनसंख्या नियंत्रण के उपाय बता सकेंगे और
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की मुख्य बातें रेखांकित कर सकेंगे।

14.1 जनसंख्या का अर्थ

जनसंख्या का सीधा अर्थ है- लोगों की संख्या। किसी समय में किसी राज्य या देश में जितने लोग रह रहे हैं, वह वहाँ की जनसंख्या है।

हमारे देश में हर दस साल में जनगणना होती है। जनगणना, यानी लोगों की गिनती। पिछली जनगणना सन् 2011 में हुई थी। उस समय आपके घर भी जनगणना करने वाले कर्मचारी आए होंगे। जनगणना में लोगों की गिनती तो होती ही है, और भी कई बातें पूछी जाती हैं। जैसे- घर की स्थिति, घर में मवेशियों की संख्या, परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या आदि। इससे बहुत सी जानकारियाँ सरकार को मिल जाती हैं। इन जानकारियों से देश के लिए विकास की योजनाएँ बनाने में मदद मिलती है। सन् 2011 में हुई जनगणना के हिसाब से हमारे देश की जनसंख्या करीब एक अरब बाइस करोड़ थी।

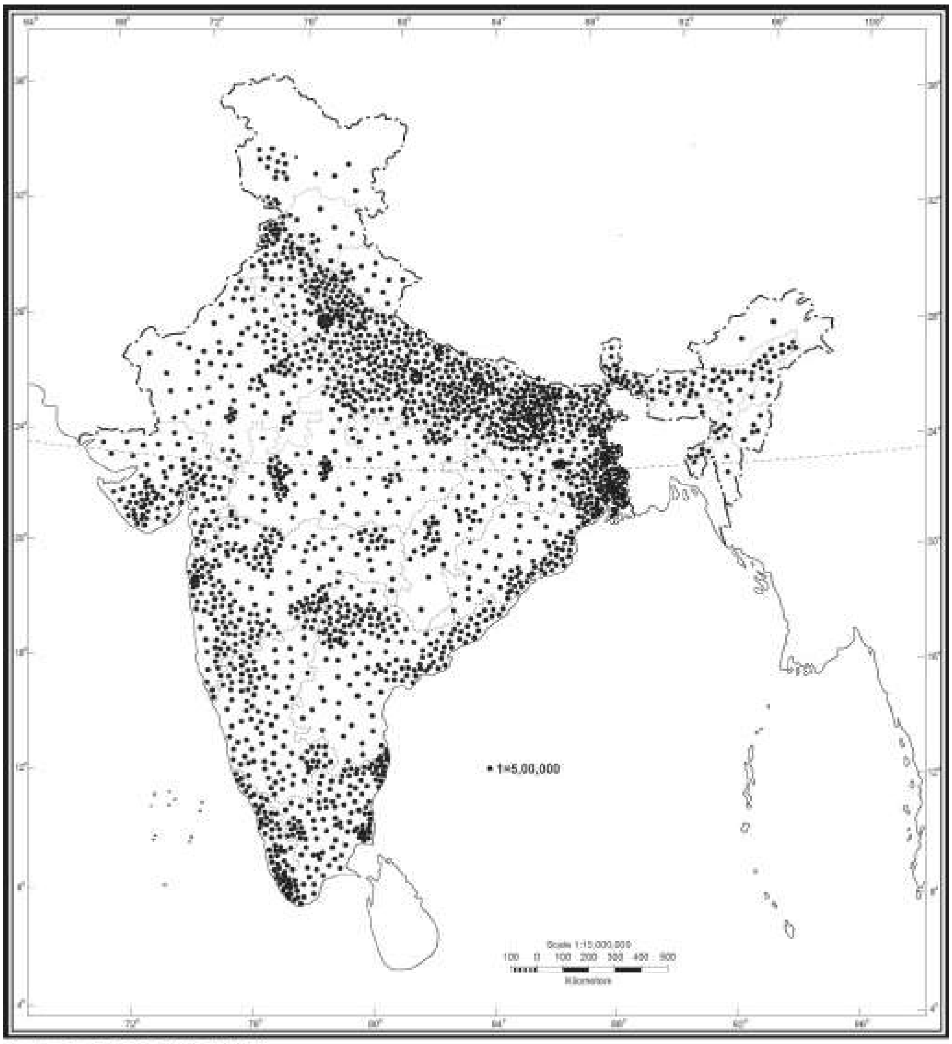

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1990
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The boundary of Meghalaya shown of this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971, but has yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1996

चित्र 14.1 : भारत : जनसंख्या का वितरण

14.2 जनसंख्या विस्फोट क्या है?

जनसंख्या में बहुत तेजी से होने वाली बढ़ोत्तरी को जनसंख्या विस्फोट कहते हैं। आप अपने आस-पास नजर डालिए- हर जगह भीड़ ही भीड़ दिखाई देती है। ट्रेनों में बड़ी मुश्किल से बैठने की जगह मिल पाती है। बसें मिलती हैं खचाखच भरी हुई। अस्पतालों में मरीजों की लम्बी लाइनें दिखाई देती हैं। सब जगह भीड़ ही भीड़। सोचिए, क्या कारण है इसका?

अपने गाँव की हालत देखिए। पुराने लोगों से बात कीजिए– वे बताएँगे कि पहले गाँव इतना फैला हुआ नहीं था। खूब सारे खेत थे चारों ओर। हरियाली थी। पेड़-पौधे थे। अब जगह-जगह मकान बन गए हैं। सोचिए, ऐसा क्यों हुआ?

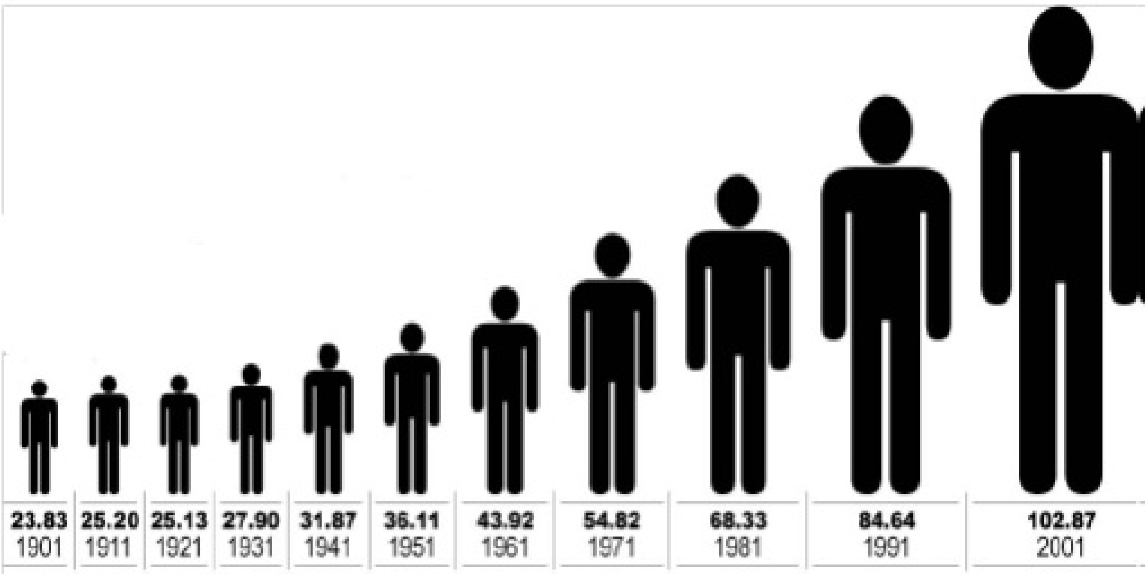

चित्र 14.2 : भारत : जनसख्ंया की दशकीय वृद्धि

यह सब हुआ है जनसंख्या के बेतहाशा बढ़ने के कारण। एक अनुमान के अनुसार हमारे देश में हर एक मिनट में 33 बच्चों का जन्म होता है। इस तरह, एक घंटे में करीब 2,000 और एक दिन में करीब 48,000 बच्चे जन्म लेते हैं। एक साल का हिसाब लगाएँ तो यह संख्या 1 करोड़ 75 लाख हो जाती है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि दुनिया के कई देशों की कुल जनसंख्या इससे कम है।

जनसंख्या विस्फोट का एक उदाहरण देखिए- हमारे देश की जनसंख्या सन् 1911 की जनगणना के अनुसार 25.20 करोड़ थी, यानी 25 करोड़ 20 लाख। सन् 2011 में यह बढ़कर 122 करोड़ हो गई। यानी 100 सालों में जनसंख्या करीब पाँच गुना बढ़ गई।

जनसंख्या में हुई इस बढ़ोत्तरी के दो मुख्य कारण थे- 1. जन्मदर का बढ़ना, और 2. मृत्युदर का कम होना। जन्मदर बढ़ने के मुख्य कारण थे गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक व धार्मिक मान्यताएँ। मृत्युदर कम होने के मुख्य कारण थे- स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जागरूकता।

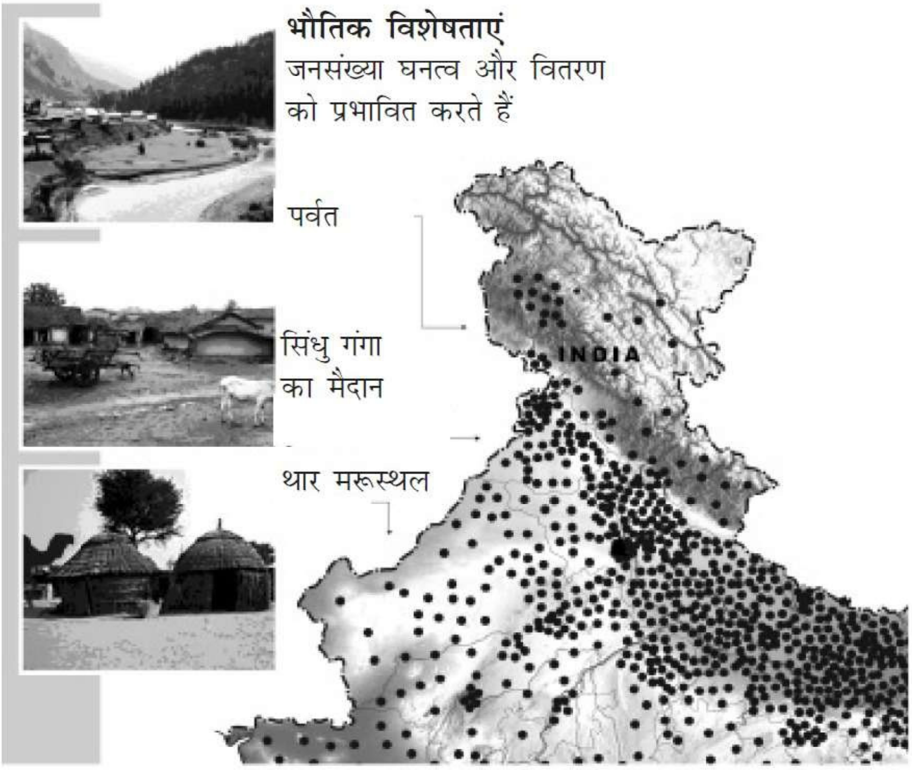

चित्र 14.3 : जनसंख्या को प्रभावित करने वाले भौतिक कारक

तेजी से बढ़ती इस जनसंख्या का क्या असर पड़ता है, आइए, इसे जानें।

14.3 जनसंख्या बढ़ने से पड़ने वाले प्रभाव

यह तो आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। जनसंख्या के मामले में हमसे आगे केवल चीन है पर चीन का क्षेत्रफल भारत से काफी ज्यादा है। क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का दुनिया में सातवाँ स्थान है। अगर भारत की जनसंख्या इसी रफ्तार से बढ़ती रही, तो सन् 2025 तक हम चीन को पीछे छोड़ देंगे। सोचिए, तब क्या हालत होगी।

किसी भी देश की जनसंख्या उस देश की मानव-शक्ति होती है। इसका देश के विकास के लिए संसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। संसाधन, यानी ऐसा साधन, जिसका कहीं कुछ अच्छा इस्तेमाल किया जा सके। पर यही जनसंख्या जब बहुत बढ़ जाती है तो देश के लिए आफत भी बन जाती है। जनसंख्या अधिक होने के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव तो पड़ते ही हैं, पर्यावरण पर भी इसका असर पड़ता है।

सामाजिक प्रभाव

आप अक्सर ही अखबारों में पढ़ते होंगे कि देश में हर साल बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही है। कभी सोचिए कि क्यों नहीं मिल पा रहा है लोगों को काम? क्यों हो रही है काम की कमी? इसलिए कि

लोग ज्यादा हैं और काम कम। ऐसी हालत में सबको काम कैसे मिल सकता है! काम नहीं मिलता, तो कभी-कभी लोग गलत रास्ता पकड़ लेते हैं। इससे अपराध भी बढ़ते हैं।

मुख्य रूप से जनसंख्या अधिक होने से जो प्रभाव पड़ते हैं, वे हैं–

1. गंदी बस्तियों का बढ़ना,
2. नागरिक सुविधाओं की कमी,
3. रोजगार के अवसरों की कमी, और
4. अपराधों में बढ़ोत्तरी।

आर्थिक प्रभाव

जनसंख्या ज्यादा होती है, तो हर एक के हिस्से में कम चीजें आती हैं। जमीन का ही उदाहरण लें– देश में जमीन तो उतनी ही है। उसे तो बढ़ाया नहीं जा सकता पर उसका इस्तेमाल करने वाले बढ़ते ही जा रहे हैं। सौ साल पहले जिस जमीन पर 25 करोड़ लोग रहते थे, आज उसी पर 122 करोड़ रहते हैं। इससे हर एक के हिस्से की जमीन कम हो गई है। ऐसे में गुजारा कैसे होगा?

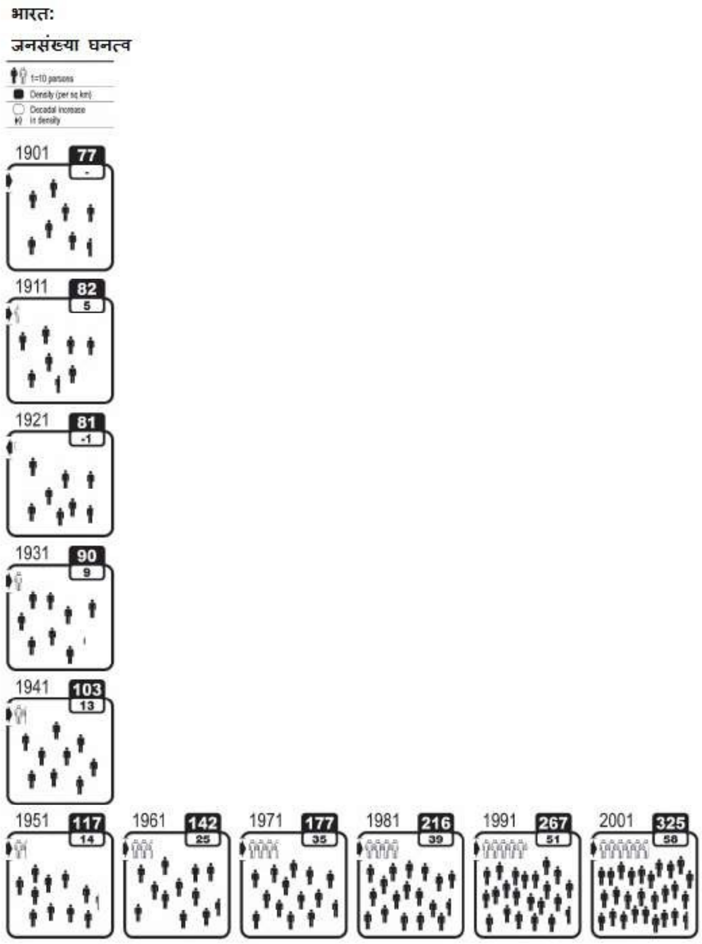

चित्र 14.4 : जनसंख्या घनत्व

अपने परिवार में देखें- आपके दादा जी के पास जितनी जमीन थी, क्या आपके पास उतनी ही आ पाई है? नहीं न! पहले जमीन आपके पिता, चाचा, ताऊ में बँटी। फिर आपके पिता के हिस्से की जमीन आपके और आपके भाई-बहिनों के बीच बँटी। तो कितनी पहुँच पाई आप तक! ऐसा ही हर चीज के साथ होता है।

देश में पानी, कोयला, लोहा, पेट्रोल आदि सीमित मात्रा में हैं पर उनका इस्तेमाल करने वाले बढ़ते जा रहे हैं। इससे ये संसाधन कम पड़ जाते हैं। तब दूसरे देशों से ये चीजें मँगानी पड़ती हैं। इससे देश पर आर्थिक बोझ पड़ता है। जो धन किसी जन-कल्याण की योजना में खर्च हो सकता था, वह इन कार्यों में खर्च हो जाता है।

लोग अक्सर शिकायत करते हैं कि सरकार की आर्थिक योजनाओं का फायदा सबको नहीं मिल पाता। दरअसल योजनाएँ तो सभी को ध्यान में रखकर बनती हैं पर जनसंख्या बढ़ने की रफ्तार ज्यादा तेज होती है। इससे सभी को उनका फायदा नहीं मिल पाता।

एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हुए हैं माल्थस। उनका एक जनसंख्या का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार उत्पादन 1-2-3-4-5 इस तरह से बढ़ता है पर जनसंख्या बढ़ने की रफ्तार 1-2-4-8-16 होती है। जिस तेजी से जनसंख्या बढ़ती है, उस तेजी से उत्पादन नहीं बढ़ पाता इसलिए उत्पादन हमेशा माँग से कम रह जाता है। इससे माँग और पूर्ति में अन्तर रह जाता है। इस अन्तर को जनसंख्या बढ़ने की दर कम करके ही दूर किया जा सकता है।

पर्यावरण पर प्रभाव

जनसंख्या बढ़ने से पर्यावरण भी अछूता नहीं रहता। ज्यादा लोगों के लिए ज्यादा मकानों की जरूरत पड़ती है। इसके लिए जमीन चाहिए। जमीन में मकान बन सकें, इसके लिए पेड़ काटे जाते हैं। इससे जमीन के अन्दर का पानी कम हो जाता है। मौसम में भी बदलाव होता है।

लोगों की बढ़ती संख्या की जरूरत के अनुसार यातायात के साधन बढ़ते हैं। इसके लिए सड़कें बनती हैं। सड़कों के लिए जंगल कटते हैं। यातायात के साधन बढ़ते हैं, तो प्रदूषण भी बढ़ता है।

इसी तरह जरूरतें पूरी करने के लिए नए-नए उद्योग धंधे लगते हैं। कारखाने बनते हैं। इससे भी हवा और पानी का प्रदूषण बढ़ता है।

पाठगत प्रश्न 14.1

1. जनसंख्या का क्या अर्थ है?

    ....

2. जनगणना कितने साल में होती है?

....

3. जनसंख्या विस्फोट क्या है?

....

4. जनसंख्या बढ़ने का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है?

....

14.4 जन्मदर और मृत्युदर

जन्मदर

जन्मदर का अर्थ है- किसी एक साल में प्रति एक हजार जनसंख्या पर कुल जन्मे जीवित बच्चों की संख्या। इसे एक गाँव के उदाहरण से समझिए। माना, एक गाँव की कुल जनसंख्या 5,000 है। पिछले साल वहाँ 150 बच्चे पैदा हुए, जो जीवित हैं। तो गाँव की पिछले साल की जन्मदर इस तरह निकालेंगे $-\frac{150}{5000} \times 1000 = 30$, यानी, उस गाँव की पिछले साल की जन्म-दर 30 थी।

मृत्युदर

मृत्युदर का अर्थ है- किसी एक साल में प्रति एक हजार जनसंख्या पर कुल मृत लोगों की संख्या। इसे भी जन्मदर की ही तरह निकालते हैं। ऊपर के गाँव का ही उदाहरण लें। माना, पिछले साल गाँव में कुल 100 लोगों की मौत हुई। तो पिछले साल की मृत्युदर को इस तरह निकालेंगे $-\frac{100}{5000} \times 1000 = 20$, यानी, उस गाँव की मृत्युदर पिछले साल 20 थी।

यहाँ यह समझने वाली बात है कि कुल जनसंख्या उस साल के बीच की ली जाती है। यानी, पहली छमाही के अंत की।

जन्मदर और मृत्युदर के अन्तर से ही यह पता चलता है कि साल में जनसंख्या के बढ़ने की दर क्या है। इसे जनसंख्या की वृद्धिदर भी कहते हैं।

जन्मदर में से मृत्युदर घटाने पर जनसंख्या वृद्धिदर पता चलती है। ऊपर के उदाहरण में देखें, तो उस गाँव में पिछले साल की जनसंख्या वृद्धिदर $30 - 20 = 10$ थी।

हमारे देश में पहले जन्मदर भी बहुत ज्यादा थी और मृत्युदर भी। इससे जनसंख्या में संतुलन बना रहता था। सन् 1911 में जन्मदर 49.2 थी, तो मृत्युदर 42.6 थी। इस तरह, जनसंख्या वृद्धिदर थी $49.2 - 42.6 = 6.6$, यानी उस समय जनसंख्या प्रति हजार 6.6 ही बढ़ी। इसे यों भी कह सकते हैं कि प्रति एक हजार लोगों पर एक साल में सात से भी कम लोग बढ़े।

जन्मदर अधिक होने के कारण–

1. यह धारणा, कि ज्यादा बच्चे होंगे, तो कमाने वाले हाथ भी ज्यादा होंगे।
2. शिक्षा का कम स्तर।
3. कम उम्र में शादी।
4. बेटे की चाह में बेटियों का पैदा होते जाना।

अब सन् 2011 की जन्मदर और मृत्युदर पर नजर डालें। इस साल जन्मदर 24.97 थी, यानी 1911 के मुकाबले कम बच्चों का जन्म हुआ। पर, साथ ही, मृत्युदर भी घट गई। घटकर 7.48 रह गई। इस तरह 2011 में जनसंख्या वृद्धि-दर हुई- 24.97 – 7.48 = 17.49, यानी, प्रति एक हजार जनसंख्या पर एक साल में 17 से अधिक लोग बढ़े। इस तरह सन् 1911 के मुकाबले सन् 2011 में जनसंख्या बढ़ने की दर ज्यादा हो गई।

इससे साफ पता चलता है कि अगर जन्मदर और मृत्युदर का अन्तर कम होगा, तो जनसंख्या बढ़ने की दर भी कम होगी। दूसरी तरफ यदि अन्तर अधिक होगा, तो जनसंख्या बढ़ने की दर भी अधिक होगी।

सन् 2011 में मृत्युदर कम होने के मुख्य कारण हैं–

1. स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार,
2. स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरूकता आदि।

सन् 2011 में जन्मदर भी कम हुई है। इसके मुख्य कारण हैं–

1. साक्षरता के स्तर में बढ़ोत्तरी,
2. छोटे परिवार के फायदों के प्रति लोगों में जागरूकता,
3. सरकार की परिवार कल्याण सम्बन्धी योजनाएँ आदि।

ध्यान दें

अपने परिवार में हुए हर जन्म और मृत्यु का पंजीकरण जरूर करवाएँ।

14.5 लिंग अनुपात

लिंग अनुपात का अर्थ है, प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या। इसे इस तरह निकालते हैं–

$$\text{लिंग अनुपात} = \frac{\text{महिलाओं की संख्या}}{\text{पुरुषों की संख्या}} \times 1000$$

मान लीजिए, किसी गाँव में महिलाओं की संख्या 1800 है और पुरुषों की 2000 है। वहाँ का लिंग अनुपात इस तरह निकालेंगे–

$$\frac{1800}{2000} \times 1000 = 900$$

यानी, उस गाँव में प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 900 है।

यहाँ यह भी जान लें कि वे देश या वे समाज अच्छे माने जाते हैं, जिनमें पुरुषों और महिलाओं की संख्या बराबर है, या पुरुषों और महिलाओं की संख्या में कम से कम अन्तर है या महिलाओं की संख्या पुरुषों से ज्यादा है।

हमारे देश में पुरुष–महिला अनुपात की स्थिति बहुत खराब है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 943 थी। अब से एक सौ साल पहले सन् 1911 में प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 964 थी। इस तरह, सौ साल में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या घट गई।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश के राज्य केरल में और केन्द्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में ही पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या ज्यादा थी। केरल में 1,000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 1,084 थी। पुडुचेरी में यह संख्या 1,037 थी। बाकी सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में महिलाओं की संख्या पुरुषों से कम थी।

कुछ राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में तो हालात बहुत ही खराब हैं। दमन और दीव में प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या सबसे कम है। वहाँ यह संख्या 618 है। इससे कुछ ऊपर है दादरा और नगर हवेली। वहाँ यह संख्या 775 है। इसी तरह चंडीगढ़, दिल्ली और हरियाणा के लिंग अनुपात की स्थिति भी अच्छी नहीं है। वहाँ प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 900 से कम है।

महिलाओं की संख्या कम होने के कारण

हमारे समाज में आज भी बहुत से परिवारों में बेटियों को बेटों के मुकाबले कम महत्त्व दिया जाता है। इस कारण लोग चाहते हैं कि उनके परिवार में बेटे ही जन्में, बेटियाँ नहीं। इसके लिए कुछ लोग गर्भ में ही बेटियों को खत्म कर देते हैं। वैसे इसकी कानूनी रूप से मनाही है।

सरकार ने एक कानून बनाया है, जिसे पी.एन.डी.टी. एक्ट कहते हैं। इसके अनुसार अल्ट्रासाउंड से यह जाँच कराना गैर कानूनी है कि गर्भ में लड़की है या लड़का। ऐसा करने वाले डॉक्टर को भी सजा दी जाती है। इससे कन्या भ्रूण हत्या की घटनाओं में कमी जरूर आई है पर यह पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या कम होने का यह मुख्य कारण है।

पाठगत प्रश्न 14.2

1. जन्मदर का क्या अर्थ है?

....

2. जनसंख्या वृद्धिदर कैसे पता करेंगे?

....

3. हमारे देश में मृत्युदर घटने के क्या कारण हैं?

....

4. लिंग-अनुपात से क्या समझते हैं?

....

14.6 जनसंख्या नियंत्रण के उपाय

हमारे देश में बहुत समय पहले ही बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण रखने की जरूरत महसूस की जाने लगी थी। इसके लिए सन् 1952 में राष्ट्रीय स्तर पर परिवार नियोजन कार्यक्रम शुरू किया गया यह दुनिया का सबसे पुराना परिवार नियोजन कार्यक्रम है। इसके अन्तर्गत लोगों को परिवार छोटा रखने के लिए जागरूक किया गया। इसके लिए जनसंख्या नियंत्रण के विभिन्न तरीके अपनाने पर जोर दिया गया। परन्तु इस कार्यक्रम का बहुत असर नहीं पड़ा। इसके मुख्य कारण थे - लोगों तक इन सेवाओं का न पहुँचना, सामाजिक भय, इस सम्बन्ध में पतियों का विरोध, गर्भ निरोधक उपायों के इस्तेमाल से होने वाले कुप्रभावों की चिन्ता, जानकारी का अभाव।

जनसंख्या बढ़ने की रफ्तार पर नियंत्रण के लिए दो तरह के उपाय अपनाए जाते हैं–

1. **प्रत्यक्ष उपाय :** जिसमें परिवार नियोजन के साधन शामिल हैं। इनके लिए अस्पतालों में मुफ्त सलाह दी जाती है। सुविधाएँ भी दी जाती हैं।
2. **अप्रत्यक्ष उपाय :** इनमें शामिल हैं- (अ) साक्षरता, (ब) महिलाओं की स्थिति में सुधार, (स) जीवन-स्तर में सुधार। अप्रत्यक्ष उपायों का असर सीधे नहीं दिखाई पड़ता परन्तु लम्बे समय में जनसंख्या नियंत्रण के लिए ये उपाय बहुत कारगर हैं।

14.7 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति

हमारे देश में सन् 2000 में राष्ट्रीय जनसंख्या नीति बनाई गई। इसका उद्देश्य केवल जनसंख्या नियंत्रण नहीं था, वरन् इसमें जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने की बात भी कही गई थी। इस नीति में सन् 2045

तक जनसंख्या स्थिरीकरण की बात कही गई है। जनसंख्या के स्थिरीकरण का मतलब है, उससे आगे जनसंख्या वृद्धि-दर शून्य हो जाना। इसमें यह भी कहा गया है कि यह स्थिरीकरण आर्थिक व सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के साथ होगा। यानी, पर्यावरण के संरक्षण और लोगों के आर्थिक व सामाजिक विकास पर भी पूरा ध्यान दिया जाएगा। इसमें सीधे जनसंख्या नियंत्रण पर जोर नहीं दिया गया है। इसमें आर्थिक और सामाजिक विकास के जरिए लोगों के कल्याण में बढ़ोत्तरी करने की बात कही गई है। साथ ही, लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करके उन्हें उत्पादक परिसम्पत्ति के रूप में विकसित करने की बात कही गई है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति में जिन बातों पर जोर दिया गया है, वे हैं–

- लोगों के जीवन में गुणात्मक सुधार करना, यानी जीवन जीने की स्थितियों को बेहतर बनाना।
- लोगों के कल्याण में वृद्धि करना।
- लोगों को ऐसे मौके देना, जिससे वे मानव संसाधन के रूप में विकसित हो सकें।
- सतत् विकास को बढ़ावा देना।
- स्वास्थ्य की देखभाल की बुनियादी सुविधाएँ देना।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाना।
- गर्भ निरोधक उपाय अपनाने पर जोर देना।
- प्रजनन और शिशु स्वास्थ्य पर बल देना।
- जन्मदर और मृत्युदर कम करना।

पाठगत प्रश्न 14.3

1. हमारे देश में परिवार नियोजन कार्यक्रम कब शुरू हुआ?

   ....

2. परिवार नियोजन कार्यक्रम के असर कम होने के क्या कारण थे?

   ....

3. भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति कब बनी थी?

   ....

4. जनसंख्या स्थिरीकरण का क्या अर्थ है?

   ....

आपने क्या सीखा

- जनसंख्या के हिसाब से भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है।
- जनसंख्या का अर्थ है, लोगों की संख्या।
- हमारे देश में हर दस साल में जनगणना होती है।
- जनसंख्या में बहुत तेजी से होने वाली बढ़ोत्तरी को जनसंख्या विस्फोट कहते हैं।
- सन् 1911 में हमारे देश की जनसंख्या 25.20 करोड़ थी।
- सन् 2011 में जनसंख्या बढ़कर 122 करोड़ हो गई।
- जनसंख्या वृद्धि के दो कारण थे- 1. जन्मदर बढ़ना, 2. मृत्युदर कम होना।
- अनुमान है कि सन् 2025 तक भारत की जनसंख्या चीन से अधिक हो जाएगी।
- जनसंख्या बढ़ने का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव तो पड़ता ही है, पर्यावरण भी इससे प्रभावित होता है।
- जनसंख्या बढ़ने से बेरोजगारी बढ़ती है। हर एक के हिस्से में आने वाले संसाधन कम हो जाते हैं। यातायात के साधन बढ़ते हैं। हवा और पानी का प्रदूषण बढ़ता है।
- अर्थशास्त्री माल्थस के अनुसार उत्पादन 1-2-3-4-5 इस तरह बढ़ता है। जनसंख्या 1-2-4-8-16 की रफ्तार से बढ़ती है। इससे माँग और पूर्ति में अन्तर बना रहता है।
- किसी एक साल में प्रति एक हजार जनसंख्या पर कुल जन्मे बच्चों की संख्या जन्मदर कहलाती है।
- किसी एक साल में प्रति एक हजार जनसंख्या पर कुल मरने वालों की संख्या को मृत्युदर कहते हैं।
- जन्मदर में से मृत्युदर घटाने पर जनसंख्या वृद्धिदर पता चलती है।
- हमारे देश में मृत्युदर घटने के मुख्य कारण हैं– स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आदि।
- लिंग अनुपात का अर्थ है- प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या।
- हमारे देश में केरल और पुडुचेरी को छोड़कर बाकी सब राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेशों में महिलाओं की संख्या पुरुषों से कम है।
- महिलाओं की संख्या पुरुषों से कम होने का मुख्य कारण है-कन्या भ्रूण हत्या व बेटियों को बेटों के मुकाबले कम महत्त्व देना।
- सरकार ने कन्या भ्रूण हत्या को गैर कानूनी घोषित किया है। अल्ट्रा साउंड से भ्रूण के लिंग निर्धारण के लिए जाँच करना भी गैर कानूनी है।
- भारत में सन् 1952 में राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम शुरू किया गया।
- यह दुनिया का सबसे पुराना परिवार नियोजन कार्यक्रम माना जाता है।

- जनसंख्या नियंत्रण के लिए कई गर्भ निरोधक उपाय अपनाए जाते हैं।
- इन उपायों के सम्बन्ध में सरकारी अस्पतालों में मुफ्त सलाह दी जाती है।
- हमारे देश में सन् 2000 में राष्ट्रीय जनसंख्या नीति बनी।
- इस नीति में सन् 2045 तक जनसंख्या स्थिरीकरण की स्थिति प्राप्त करने की बात कही गई है।
- जनसंख्या स्थिरीकरण का अर्थ है- जनसंख्या वृद्धिदर शून्य हो जाना।
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति में केवल परिवार सीमित रखने पर ही जोर नहीं दिया गया है। इसमें जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने की बात भी कही गई है।

पाठांत प्रश्न

1. जनसंख्या बढ़ने के क्या-क्या प्रभाव पड़ते हैं?

....

2. हमारे देश में जन्मदर बढ़ने के मुख्य कारण लिखिए।

....

3. **खाली स्थान भरिए–**

   (i) क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का दुनिया में .... स्थान है।

   (ii) यदि इसी रफ्तार से जनसंख्या बढ़ती रही, तो भारत की जनसंख्या सन् .... तक चीन से अधिक हो जाएगी।

   (iii) जनसंख्या के हिसाब से भारत का दुनिया में .... स्थान है।

   (iv) लिंग अनुपात का अर्थ है, प्रति .... पुरुषों पर .... की संख्या।

   (v) राष्ट्रीय जनसंख्या नीति में सन् .... तक जनसंख्या स्थिरीकरण का लक्ष्य रखा गया है।

4. यदि लड़कियों के बजाय लड़के ज्यादा पैदा होते रहें, तो भविष्य में क्या समस्याएँ पैदा होंगी?

....

....

....

5. परिवार छोटा होने के क्या लाभ हैं?

....

....

आइए, करके देखें

1. अपने गाँव या मुहल्ले की पिछले साल की जन्मदर और मृत्युदर निकालें।
2. अपने गाँव या मुहल्ले का लिंग अनुपात निकालें।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

14.1 1. लोगों की संख्या।

2. दस साल में।

3. जनसंख्या में बहुत तेजी से होने वाली बढ़ोत्तरी।

4. पेड़ कटते हैं। इससे मौसम में बदलाव होता है। हवा और पानी का प्रदूषण बढ़ता है।

14.2 1. किसी एक साल में प्रति एक हजार जनसंख्या पर कुल जन्मे बच्चों की संख्या।

2. जन्मदर में से मृत्युदर घटाकर।

3. स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता।

4. प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या।

14.3 1. सन् 1952 में।

2. लोगों तक इन सेवाओं का न पहुँचना, सामाजिक भय, इस सम्बन्ध में पति का विरोध, गर्भ निरोधक उपायों के इस्तेमाल से होने वाले कुप्रभावों की चिन्ता, जानकारी का अभाव।

3. सन् 2000 में।

4. जनसंख्या वृद्धि-दर शून्य हो जाना।

पाठांत प्रश्न

1. बेरोजगारी बढ़ती है। इससे अपराध बढ़ने की आशंका भी होती है। संसाधनों की कमी हो जाती है। प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में कम चीजें आती हैं। देश पर आर्थिक बोझ पड़ता है।
2. गरीबी, अशिक्षा, धार्मिक व सामाजिक मान्यताएँ।
3. (i) सातवाँ (ii) 2025 (iii) दूसरा

   (iv) एक हजार, महिलाओं (v) 2045
4. स्वयं सोचकर लिखिए।
5. स्वयं सोचकर लिखिए।

15

आर्थिक जीवन

हमारी जरूरतें अनंत हैं जो हमेशा बढ़ती ही रहती हैं। जरूरतें दो तरह की होती हैं- आर्थिक, और गैर आर्थिक। गैर आर्थिक जरूरतों में वे चीजें आती हैं, जिनके लिए हमें धन नहीं खर्च करना पड़ता। आर्थिक जरूरतों में वे चीजें शामिल हैं, जिनके लिए हमें धन खर्च करना पड़ता है। इन्हीं जरूरतों को पूरा करने के लिए आर्थिक गतिविधियों की शुरुआत हुई क्योंकि एक की जरूरत दूसरे का रोजगार बन जाती है। किसी भी चीज का उत्पादन कोई अकेला आदमी नहीं करता। इसमें कई लोगों की जरूरत पड़ती है। घर के काम भी सभी सदस्य मिलकर करते हैं। इसे श्रम-विभाजन कहते हैं। बड़े कारखानों में भी इसी तरह श्रम-विभाजन से ही काम होता है।

आज हम चीजें या सेवाएँ बाजार से ही लेते हैं। इनके लिए हमें कुछ न कुछ कीमत चुकानी पड़ती है। भारत में बाजार पर सरकार का नियंत्रण नहीं है। अधिकतर वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मुक्त है। यह बाजारवादी व्यवस्था भी कही जाती है। इसमें चीजों और सेवाओं की कीमतें उत्पादक द्वारा ही निश्चित होती हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- आर्थिक और गैर आर्थिक जरूरतों में अंतर समझा सकेंगे;
- आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले जरूरतों के असर को समझा सकेंगे;
- श्रम-विभाजन का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- श्रम-विभाजन के फायदे बता सकेंगे;
- आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी की स्थिति बता सकेंगे और
- बाजारवादी अर्थ-व्यवस्था का मतलब समझा सकेंगे।

15.1 जरूरतें और आर्थिक जीवन

हर प्राणी को जीने के लिए कुछ चीजें जरूर चाहिए। ये हैं- हवा, पानी और भोजन। इनके बिना जीवन सम्भव नहीं हो पाएगा। इसके अलावा एक और जरूरत है, वह है आवास या रहने की जगह। मनुष्य को इन चीजों के साथ-साथ कपड़ों की भी जरूरत पड़ती है। इनके अलावा भी मनुष्य को कई जरूरतें पूरी करनी पड़ती हैं। जरूरतों की यह सूची समय के साथ बढ़ती जाती है।

पहले मनुष्य जंगलों में रहता था- गुफाओं में या पेड़ों पर। भूख लगी तो जंगल के फल-फूल खा लिए। झरने या नदी का पानी पी लिया। बाद में जरूरतें बढ़ीं। पत्थर के हथियार बनाए। वह जंगली जानवरों को मारकर खाने लगा। फिर खेती शुरू की। आग की खोज की। अनाज उगाने लगा। रहने के लिए झोपड़ी बना ली। अनाज को पकाकर खाने लगा। जानवरों को पालतू बना लिया। पशुपालन शुरू किया। फिर परिवार बने समुदाय बने। सामाजिक जीवन शुरू हुआ। इंसान केवल वर्तमान तक ही सीमित नहीं रहा। भविष्य के बारे में भी सोचने लगा। भविष्य के लिए चीजें जोड़ने लगा। संग्रह करने लगा। जब किसी ऐसी चीज की जरूरत पड़ी, जो अपने पास नहीं है, तो समुदाय के किसी दूसरे व्यक्ति से ले ली। उसके बदले उसे अपनी चीज दे दी। इस तरह व्यापार शुरू हुआ वस्तु-विनिमय के रूप में। बाद में इस व्यापार का क्षेत्र भी बढ़ गया। अपने समुदाय से बाहर भी व्यापार होने लगा।

दो तरह की जरूरतें- आर्थिक और गैर आर्थिक

जरूरतों की कोई सीमा नहीं है। हमारी ज्यादातर जरूरतें वे हैं, जिनके लिए हमें कीमत चुकानी पड़ती है। ये जरूरतें चीजों की भी हो सकती हैं और सेवाओं की भी। जिन जरूरतों के लिए हमें कीमत चुकानी पड़ती है, उन्हें 'आर्थिक जरूरतें' कहते हैं।

कुछ जरूरतें ऐसी भी होती हैं, जिनके लिए हमें कीमत नहीं चुकानी पड़ती। बिना बाजार से खरीदे ही हमें ये चीजें मिल जाती हैं। साँस लेने के लिए हमें हवा चाहिए परन्तु हवा की कीमत नहीं देनी पड़ती। बारिश के लिए भी हमें कीमत नहीं चुकानी पड़ती। बिना कीमत चुकाए ही बारिश हमारे खेतों में सिंचाई कर जाती है। इन जरूरतों को हम 'गैर आर्थिक जरूरतें' कहते हैं। पर अगर हम सिंचाई के लिए सरकारी नहर से पानी लेते हैं, उसका पैसा चुकाते हैं, तब यह आर्थिक जरूरत कही जाएगी।

इच्छाओं और जरूरतों में अन्तर : आमतौर पर हम इच्छाओं और जरूरतों को एक ही मानते हैं पर ऐसा है नहीं। हमारी इच्छाएँ तो अनंत हैं। पर हर इच्छा, जरूरत नहीं बन सकती। जिस इच्छा को पूरा करने के लिए हमारे पास संसाधन हों और हम उन संसाधनों का इस्तेमाल भी करना चाहते हों, वही इच्छा जरूरत होती है।

एक उदाहरण से इसे समझिए— हमारी इच्छा है कि हमारे पास एक मकान हो। पर हमारे पास मकान बनाने के लिए धन नहीं है, तो हमारी यह इच्छा सिर्फ इच्छा है, जरूरत नहीं। पर अगर हमारे पास धन भी है, और हम यह धन मकान बनाने के लिए खर्च करने को तैयार भी हैं, तब हमारी यह इच्छा, जरूरत कही जाएगी।

जरूरतें और आर्थिक गतिविधियाँ : जरूरतें हमारे जन्म से ही शुरू हो जाती हैं। बच्चे के जन्म लेने के बाद उसे दूध चाहिए। कपड़े चाहिए। बीमार पड़ने पर दवाइयाँ चाहिए। धीरे-धीरे ये जरूरतें भी बढ़ती जाती हैं। तरह-तरह के स्वाद वाला भोजन चाहिए। अलग-अलग तरह के कपड़े चाहिए। रहने के लिए मकान चाहिए। आने-जाने के लिए सवारी चाहिए। घर में तरह-तरह के आराम के सामान चाहिए। टी.वी. चाहिए। फोन चाहिए। चारपाई, कुर्सी-मेज चाहिए। इस सूची का कोई अन्त नहीं है।

चित्र 15.1 : एक की जरूरत दूसरे का रोजगार

इन जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें काम करना पड़ता है। बिना काम किए केवल सोचने भर से जरूरतें पूरी नहीं हो सकतीं। खाने के लिए खाना बनाना ही पड़ता है। खाना बनाने के लिए चीजें खरीदनी पड़ती हैं। सारी चीजें तो अपने ही घर में पैदा नहीं हो सकतीं। बाजार में हम दुकानदार से ये चीजें खरीदते हैं। दुकानदार भी उन चीजों को खुद नहीं बनाते या उगाते। वे किसी और जगह से खरीदते हैं। तो कोई भी चीज हम तक पहुँचाने में कई लोगों का हाथ होता है। कोई उसे उगाता है या बनाता है, कोई पैकिंग करता है। कोई ढुलाई करके बड़े दुकानदारों तक पहुँचाता है। बड़े दुकानदार छोटे दुकानदारों तक पहुँचाते हैं। वहाँ से वे चीजें हमारे पास पहुँचती हैं।

इस तरह, आपने देखा कि हमारी एक जरूरत से कितने लोगों का रोजगार जुड़ा होता है इसीलिए कहा जाता है कि एक की जरूरत दूसरे का रोजगार बनती है। जरूरतों ने ही आर्थिक गतिविधियों को जन्म दिया है। हम कह सकते हैं कि अगर जरूरतें न होतीं तो आर्थिक गतिविधियाँ भी नहीं होतीं। इन जरूरतों के कारण ही कई नई-नई खोजें हुई हैं।

हमारी जरूरत की कुछ चीजें नि:शुल्क होती हैं। ये चीजें हमें प्रकृति से मिली हैं। कुछ चीजों के लिए हमें कीमत चुकानी पड़ती है। ये ज्यादातर वे चीजें हैं, जो इंसान ने बनाई हैं। इसी तरह से सेवाएँ भी होती हैं। कई सेवाएँ नि:शुल्क होती हैं, जैसे- घर में माता-पिता का बच्चों की देखभाल करना पर कुछ सेवाओं के लिए कीमत चुकानी पड़ती है, जैसे- बाल कटवाना, कपड़े सिलवाना, जूते ठीक करवाना।

पाठगत प्रश्न 15.1

1. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर × का निशान लगाइए–

(क) जरूरतों और इच्छाओं में कोई अन्तर नहीं है। ( )

(ख) जरूरतें अनंत होती हैं। ( )

(ग) एक की जरूरत दूसरे का रोजगार बनती है। ( )

(घ) घर में बच्चे को पढ़ाना आर्थिक गतिविधि है। ( )

(च) जरूरतें ही सभी आर्थिक गतिविधियों का आधार हैं। ( )

2. सही (✓) का निशान लगाकर बताइए कि कौन-सी गतिविधि आर्थिक है और कौन-सी गैर-आर्थिक–

(क) सुबह टहलना — आर्थिक/गैर आर्थिक

(ख) सब्जी खरीदना — आर्थिक/गैर आर्थिक

(ग) घर पर बच्चे को पढ़ाना — आर्थिक/गैर आर्थिक

(घ) बढ़ई का अपनी खाट की मरम्मत करना — आर्थिक/गैर आर्थिक

(च) भाड़े पर रिक्शा चलाना — आर्थिक/गैर आर्थिक

15.2 श्रम विभाजन

आपने अपने घर में देखा होगा- घर के काम, खेती के काम सब लोग मिल-जुलकर करते हैं। खेती में एक ने जुताई कर दी। दूसरे ने खेत को चौरस बना दिया। किसी ने सिंचाई कर दी, बीज बो दिए। कोई खेत में काम करने वालों के लिए घर से खाना बनाकर ले गया। इससे काम बँट जाता है। एक ही सदस्य पर काम का बोझ नहीं पड़ता। समय भी कम लगता है। इसे श्रम-विभाजन कहते हैं।

पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे। तब घर के कामों में श्रम-विभाजन खूब देखने को मिलता था। घर का एक सदस्य घर की साफ-सफाई कर देता था। दूसरा खाना पका देता था। कोई जानवरों को दाना-पानी दे देता था, कोई पानी भर देता था। यह उन परिवारों की विशेषता थी और मजबूती भी। अब धीरे-धीरे संयुक्त परिवार कम होते जा रहे हैं इसलिए घर के कामों में श्रम-विभाजन का रूप कम ही देखने को मिलता है।

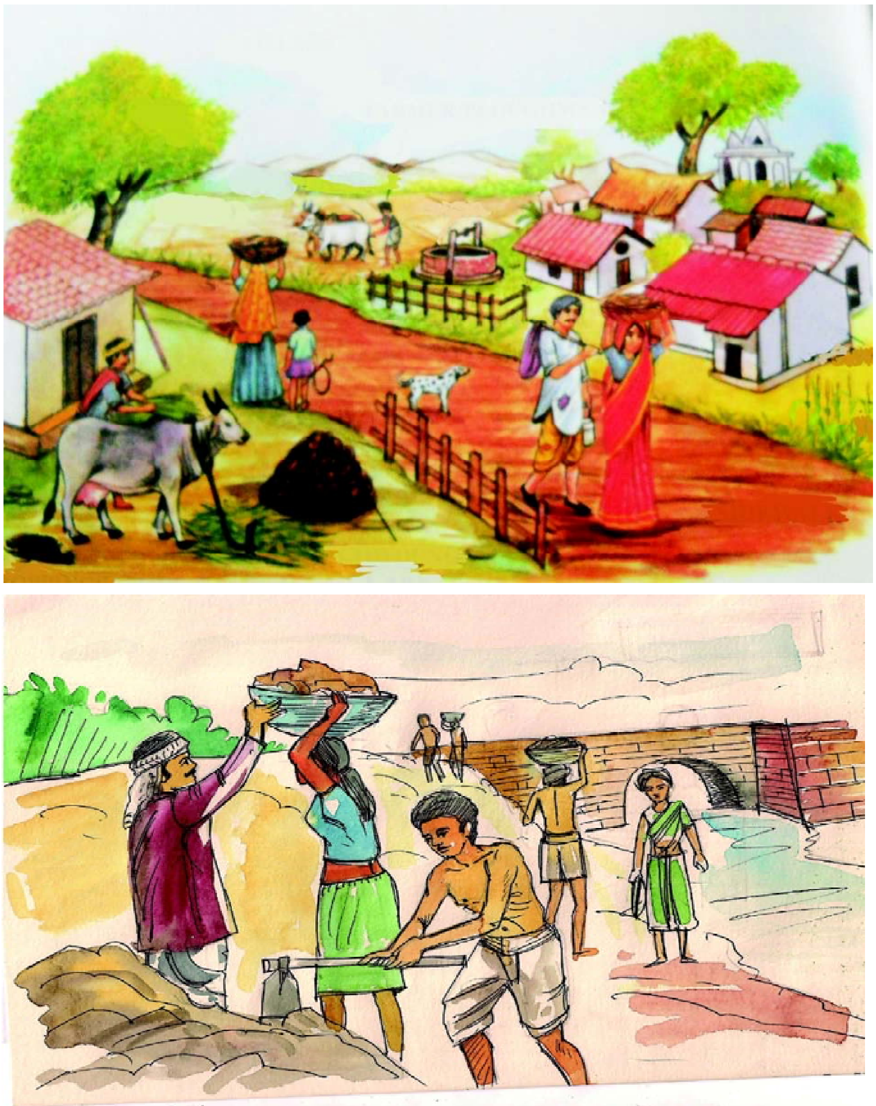

चित्र 15.2 : श्रम विभाजन

जहाँ किसी चीज का उत्पादन होता है, वहाँ भी श्रम-विभाजन दिखाई पड़ता है। कपड़े सिलने की बड़ी दुकानों में आप कभी देखिए- एक ही आदमी सब काम नहीं करता। कोई कपड़ों की कटिंग करता है, कोई सिलता है, कोई काज बनाता है, कोई तुरपाई करता है। ऐसा ही बड़े कारखानों में भी होता है। मान लीजिए, कोई बड़ी मशीन बननी है। तो पूरी की पूरी मशीन एक ही जगह नहीं बनती। एक ही कारीगर उसे नहीं बनाता। मशीन के अलग-अलग पुर्जे, हिस्से अलग-अलग कारीगर बनाते हैं। फिर सबको मिलाकर एक मशीन बन जाती है। यह है श्रम-विभाजन।

श्रम-विभाजन का आधार उम्र भी है और लिंग भी। अधिक भारी काम बड़ी उम्र के लोगों और महिलाओं को नहीं सौंपे जाते। इसी तरह, कुछ काम ऐसे हैं, जो ज्यादातर महिलाओं को ही सौंपे जाते हैं। जैसे- घड़ियों के कारखाने में ज्यादातर काम महिलाएँ ही करती हैं। अस्पतालों में मरीजों की देखभाल का काम ज्यादातर महिला नर्स ही करती हैं।

श्रम-विभाजन के फायदे : श्रम-विभाजन से कई तरह के फायदे होते हैं। इसके खास-खास फायदे हैं–

1. **काम का बोझ बँट जाना :** काम का सारा बोझ एक ही सदस्य पर नहीं आता। काम का बँटवारा हो जाता है।
2. **समय की बचत :** श्रम-विभाजन से समय की भी बचत होती है। किसी एक काम को अगर एक ही आदमी करे, तो अधिक समय लगेगा। पर वही काम अगर चार लोग मिलकर करते हैं, तो समय कम लगता है। कारखानों में इस तरह काम करने से कम समय में अधिक उत्पादन हो सकता है।
3. **अपने-अपने काम में विशेषज्ञ हो जाना :** एक आदमी एक तरह का काम करता है, तो लगातार करते-करते उस काम में विशेषज्ञ हो जाता है। इससे उत्पादन बेहतर होता है। गुणवत्ता बढ़ती है। साथ ही, विशेषज्ञ कारीगर को मजदूरी भी ज्यादा मिलती है।
4. **क्षमता का सही इस्तेमाल :** जो कारीगर जिस काम का विशेषज्ञ है, उससे वही काम लिया जाए, तो उसकी क्षमताओं का सही इस्तेमाल होगा। श्रम-विभाजन से ऐसा किया जा सकता है।
5. **गलती की गुंजाइश कम :** अपने-अपने काम के विशेषज्ञ जब अपना ही काम करते हैं, तो काम अच्छा होता है। उसके काम में गलती होने की गुंजाइश कम होती है। इससे उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ती है। नुकसान भी कम होता है।
6. **अधिक लोगों को रोजगार :** श्रम-विभाजन होने से एक ही आदमी सभी काम नहीं करता। इस कारण अधिक लोगों को रोजगार मिलता है।

15.3 आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी

आर्थिक गतिविधियों के आधार पर हम अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों में बाँट सकते हैं–

1. प्राथमिक क्षेत्र　　2. द्वितीयक क्षेत्र　　3. तृतीयक क्षेत्र

1. **प्राथमिक क्षेत्र :** इसमें खेती–बाड़ी, पशुपालन, मछली पालन जैसी गतिविधियाँ आती हैं। इन सब गतिविधियों में प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं। यह आर्थिक गतिविधियों का सबसे पुराना क्षेत्र है। जब पुराने समय में इंसान ने आर्थिक गतिविधियाँ शुरू कीं, तो प्राकृतिक संसाधनों का ही इस्तेमाल किया। धीरे–धीरे विकास होता गया, और दूसरे क्षेत्रों की गतिविधियाँ शुरू हुईं।

चित्र 15.3 : प्राथमिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी

2. **द्वितीयक क्षेत्र :** इस क्षेत्र में उद्योग-धंधे, मकानों आदि का निर्माण, बिजली आदि की आपूर्ति करना जैसे काम आते हैं।

3. **तृतीयक क्षेत्र :** तृतीयक क्षेत्र में सेवा से जुड़ी गतिविधियाँ शामिल हैं, जैसे- बाल काटने, कपड़े सिलने, जूते ठीक करने का काम, वकालत, शिक्षक, इंजीनियर आदि का काम, परिवहन सेवाएँ, बैंक आदि। ये कुछ उत्पादन नहीं करते पर हमें सेवाएँ देते हैं। अपनी सेवाएँ देकर हमारी जरूरतें पूरी करते हैं। इसमें कई सरकारी सेवाएँ भी आती हैं, जैसे- परिवहन, डाक, दूरसंचार आदि।

ये सभी क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़े हैं और एक-दूसरे पर निर्भर भी हैं।

इन क्षेत्रों में से सबसे अधिक महिलाएँ प्राथमिक क्षेत्र के काम करती हैं। अब भी भारत की ज्यादातर आबादी खेती-बाड़ी से जुड़ी है। खेती-बाड़ी के काम महिलाएँ ही अधिक करती हैं इसलिए प्राथमिक क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं की संख्या अधिक है।

द्वितीयक क्षेत्र में महिलाओं की संख्या प्राथमिक क्षेत्र से कम है। वैसे अब इस क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। तृतीयक क्षेत्र में भी महिलाओं की संख्या कम है। एक अनुमान के अनुसार शहरी क्षेत्रों में कुल 14% महिलाएँ ही आर्थिक गतिविधियों से जुड़ी हैं। गाँवों में आर्थिक गतिविधियों से जुड़ी महिलाएँ 30% हैं। यानी, गाँवों में आर्थिक कामों से जुड़ी महिलाओं का प्रतिशत शहरों से अधिक है। ऐसा मुख्य रूप से खेती-बाड़ी और पशुपालन में महिलाओं के जुड़े होने के कारण है।

द्वितीयक क्षेत्र में ज्यादातर वे काम आते हैं, जिनमें लोगों को वेतन मिलता है। तृतीयक क्षेत्र में भी कई सेवाओं से जुड़े कर्मचारी वेतनभोगी हैं। इन क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या कम है। यह इसी से पता चलता है कि देश में कुल वेतनभोगियों में से महिलाएँ 10% से कम हैं।

स्वरोजगार जरूर ऐसा क्षेत्र है, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएँ जुड़ी हुई हैं। स्वरोजगार में लगे लोगों में से करीब 37% महिलाएँ हैं।

द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रों में महिलाओं की कम संख्या के कारण : द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या कम होने के मुख्य कारण हैं–

1. **ग्रामीण क्षेत्रों व छोटे शहरों में इन क्षेत्रों के कामों की कमी :** ग्रामीण क्षेत्रों व छोटे शहरों में द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्र के काम कम हैं। पुरुष तो पास के शहरों में भी काम करने के लिए निकल जाते हैं पर महिलाएँ गाँवों में ही रह जाती हैं।

2. **सामाजिक परिस्थितियाँ :** कई परिवारों में अब भी महिलाओं का काम के लिए जाना अच्छा नहीं माना जाता। इसके साथ ही, असुरक्षा का भाव भी उन्हें घर से दूर जाकर काम करने से रोकता है।

3. **साक्षरता-दर कम होना :** पुरुषों की तुलना में अब भी महिलाओं की साक्षरता-दर कम है। इसके अलावा तकनीकी योग्यता की दर भी पुरुषों से कम है। इस कारण भी द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या कम है।

पाठगत प्रश्न 15.2

1. **सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए-**

(क) श्रम-विभाजन से समय की बचत होती है। ( )

(ख) श्रम-विभाजन से एक ही कारीगर पर काम का अधिक भार हो जाता है। ( )

(ग) प्राथमिक क्षेत्र में सेवा से जुड़े काम आते हैं। ( )

(घ) महिलाओं के आर्थिक गतिविधियों से कम जुड़ाव का एक कारण सामाजिक परिस्थितियाँ भी हैं। ( )

(च) संयुक्त परिवारों में श्रम-विभाजन देखने को नहीं मिलता था। ( )

15.3 बाजारवादी अर्थव्यवस्था

आइए, पहले जानें कि 'बाजार' क्या है। बाजार वह जगह है, जहाँ बेचने वाले और खरीदने वाले चीजों या सेवाओं को बेचते-खरीदते हैं। बेचने वाले, यानी, विक्रेता या सेवा देने वाले और खरीदने वाले, यानी, क्रेता या उपभोक्ता। जरूरी नहीं कि यह खरीद-बिक्री आमने-सामने ही हो। विक्रेता और उपभोक्ता एक ही जगह पर हों, यह जरूरी नहीं। आजकल फोन और इंटरनेट से भी खरीद-बिक्री हो जाती है। हम फोन या इंटरनेट के जरिए अपना ऑर्डर भेज सकते हैं। हमारा सामान हमारे घर पर ही पहुँचा दिया जाता है। इस तरह बाजार का क्षेत्र भी बढ़ गया है।

बाजार होने के लिए जरूरी है कि चीजों या सेवाओं की माँग की जा रही हो और उनकी आपूर्ति की कोशिशें भी हो रही हों। यानी, यह दोतरफा व्यवहार है। यह चीज या सेवा की माँग और पूर्ति पर निर्भर है।

बाजार कई तरह के होते हैं। सरकारी नियंत्रण के आधार पर बाजार को दो वर्गों में बाँटा जाता है-

1. मुक्त बाजार या खुला बाजार, और
2. नियंत्रित बाजार।

चित्र 15.4 : मुक्त बाजार

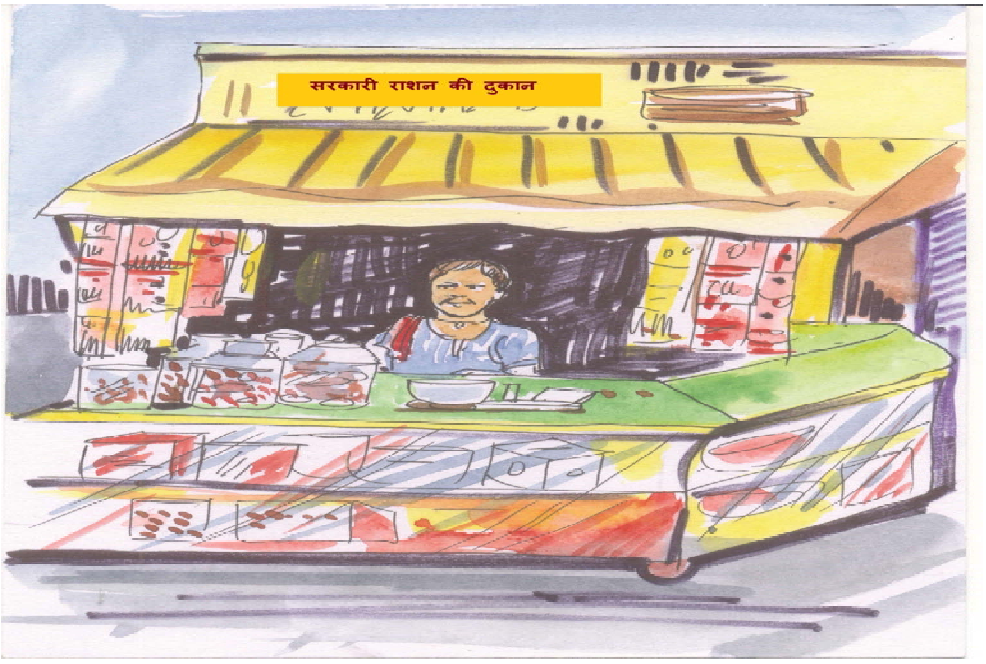

चित्र 15.5 : नियंत्रित बाजार

मुक्त बाजार पर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं होता। बाजार में बेची जाने वाली चीजों या सेवाओं की कीमतों पर भी सरकार का नियंत्रण नहीं होता। बिकने वाली चीजों की मात्रा पर भी सरकार का कोई दखल नहीं होता इसलिए चीजों की खरीद और बिक्री खुले बाजार में होती है। माँग और पूर्ति के आधार पर ही कीमतें तय होती हैं। भारत में ज्यादातर चीजों और सेवाओं के बाजार 'मुक्त बाजार' ही हैं। परन्तु कई चीजों का नियंत्रण सरकार के हाथ में है इसलिए इसे मिश्रित अर्थ-व्यवस्था वाला देश कहा जाता है।

नियंत्रित बाजार में चीजों की मात्रा और कीमत पर सरकार का नियंत्रण रहता है। ऐसा उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए किया जाता है। भारत में राशन की दुकानें नियंत्रित बाजार का एक रूप हैं।

बाजारवादी अर्थव्यवस्था पूरी तरह मुक्त अर्थव्यवस्था है।

बाजारवादी अर्थव्यवस्था में खरीददारों को आकर्षित करने के तरीके : बाजारवादी अर्थव्यवस्था में कई उत्पादक एक ही चीज का उत्पादन कर सकते हैं। इस तरह की अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता के पास कई विकल्प मौजूद रहते हैं। यानी, वह कई कम्पनियों के एक जैसे उत्पादों में से अपनी पसंद का उत्पाद खरीद सकता है इसलिए हर कम्पनी उपभोक्ता को लुभाने की कोशिश करती है। इसके लिए कई तरीके अपनाए जाते हैं–

1. **कम कीमत तय करना :** यह सबसे ज्यादा कारगर तरीका है। कोई कम्पनी अपनी चीजों की कीमत दूसरी कम्पनियों से कम रख सकती है। इससे उपभोक्ता कम कीमत के लालच में उस उत्पाद को खरीदना चाहेगा। यदि वह उत्पाद उपभोक्ताओं को पसंद आने लगा, तो धीरे-धीरे कम्पनी उसकी कीमत बढ़ा देती है।

2. **अच्छी सेवाएँ व सुविधाएँ देना :** कई विक्रेता या कम्पनियाँ उपभोक्ता को कुछ सुविधाएँ देती हैं, जैसे किस्तों में सामान देना, उन्हें घर तक पहुँचाना, बिक्री के बाद कुछ समय तक मुफ्त सर्विसिंग करना आदि। इससे भी उपभोक्ता उस कम्पनी या विक्रेता की चीजें खरीदने के लिए आकर्षित होते हैं।

3. **गुणवत्ता में सुधार :** सामान की गुणवत्ता भी उपभोक्ताओं को आकर्षित करती है। उपभोक्ता अच्छी गुणवत्ता वाले सामान को ज्यादा कीमत देकर भी खरीद लेते हैं।

4. **बिक्री बढ़ाने की योजनाएँ :** इसके लिए विक्रेता तरह-तरह की योजनाएँ चलाते हैं, जैसे- मुफ्त उपहार देना, एक खरीदने पर एक मुफ्त देना, लॉटरी निकालकर उपहार देना आदि।

5. **विज्ञापन :** बाजारवादी अर्थव्यवस्था में विज्ञापन उपभोक्ता तक पहुँचने का सबसे कारगर साधन है। अखबारों, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट के जरिए अपने उत्पादों की जानकारी उपभोक्ता तक पहुँचाना अब बहुत आसान हो गया है। उपभोक्ता घर बैठे ही जान जाता है कि किस सामान की कीमत कितनी है और विशेषताएँ क्या हैं। इस तरह उपभोक्ता अलग-अलग कम्पनियों के उत्पादों की अच्छाइयों और कमियों को जान सकता है।

पाठगत प्रश्न 15.3

1. **सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–**

(क) सरकारी नियंत्रण के आधार पर बाजार दो प्रकार के हैं- मुक्त बाजार और .... बाजार। (खुला / नियंत्रित)

(ख) मुक्त बाजार में कीमतें माँग और .... के आधार पर तय होती हैं। (उत्पादन / पूर्ति)

(ग) भारत .... अर्थव्यवस्था वाला देश है। (पूंजीवादी, मिश्रित)

(घ) बाजार वह जगह है, जहाँ खरीददार और विक्रेता चीजें या सेवाएँ .... और बेचते हैं। (देखते / खरीदते)

आपने क्या सीखा

- हर प्राणी को जीने के लिए हवा, पानी और भोजन जरूर चाहिए।
- मनुष्य के लिए इनके साथ-साथ आवास और कपड़ों की भी जरूरत होती है।
- पहले मुनष्य जंगलों में रहता था। तब उसकी जरूरतें कम थीं।

- धीरे-धीरे जरूरतें बढ़ने लगीं।
- जरूरतें दो तरह की होती हैं- आर्थिक और गैर आर्थिक।
- गैर आर्थिक जरूरतें पूरी करने के लिए हमें कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है।
- इच्छाएँ अनंत हैं।
- जिस इच्छा को पूरा करने के लिए हमारे पास संसाधन हों और हम उनका इस्तेमाल भी करना चाहते हों, वह इच्छा, जरूरत कही जाएगी।
- जरूरतों को पूरा करने के लिए काम करना पड़ता है।
- एक की जरूरत दूसरे का रोजगार बनती है।
- एक ही काम को कई लोग बाँटकर करते हैं, तो इसे श्रम-विभाजन कहते हैं।
- श्रम-विभाजन से काम का बोझ बँट जाता है। समय की बचत होती है। काम करने वाला अपने काम में विशेषज्ञ हो जाता है। करने वाले की क्षमता का सही इस्तेमाल होता है। काम में गलती की गुंजाइश कम होती है। अधिक लोगों को रोजगार मिलता है।
- आर्थिक गतिविधियों के आधार पर अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों में बाँट सकते हैं- प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक।
- प्राथमिक क्षेत्र में खेती, पशुपालन जैसी गतिविधियाँ आती हैं। द्वितीयक क्षेत्र में उद्योग-धंधे, मकानों का निर्माण जैसे काम आते हैं। तृतीयक क्षेत्र में सेवा-क्षेत्र शामिल हैं।
- सेवा-क्षेत्र का मतलब है, जिन गतिविधियों में उत्पादन नहीं होता पर उनसे हमारी जरूरतें पूरी होती हैं।
- सबसे अधिक महिलाएँ प्राथमिक क्षेत्र में काम करती हैं।
- भारत में करीब 37% महिलाएँ स्व-रोजगार से जुड़ी हैं।
- द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या कम होने के मुख्य कारण हैं- गाँवों व छोटे शहरों में इन क्षेत्रों के कामों की कमी, सामाजिक परिस्थितियाँ, साक्षरता-दर कम होना।
- बाजार वह जगह है, जहाँ खरीददार और विक्रेता चीजें या सेवाएँ खरीदते और बेचते हैं।
- इसके लिए विक्रेता व उपभोक्ता का एक ही जगह पर होना जरूरी नहीं है।
- आजकल फोन और इंटरनेट के जरिए भी सामान खरीदा-बेचा जाता है।
- सरकारी नियंत्रण के आधार पर बाजार के दो वर्ग हैं- मुक्त बाजार और नियंत्रित बाजार।
- मुक्त बाजार पर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं होता।
- बाजारवादी अर्थव्यवस्था में विक्रेता, खरीददारों को आकर्षित करने के लिए कई तरीके अपनाते हैं- कम कीमत तय करना, अच्छी सेवाएँ व सुविधाएँ देना, गुणवत्ता में सुधार, बिक्री बढ़ाने की योजनाएँ, विज्ञापन।

आइए, करके देखें

1. अपनी आर्थिक और गैर आर्थिक जरूरतों की सूची बनाइए।
2. आपके घर के कामों में किस तरह श्रम-विभाजन हुआ है, इसकी सूची बनाइए।

पाठांत प्रश्न

1. सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाइए–

(क) इनमें से किसे वस्तु कहेंगे–

☐ टेलीविजन ☐ कपड़े सिलना

☐ किताब पढ़ना ☐ यात्रियों को इधर-उधर ले जाना

(ख) इनमें से सेवा कौन-सी है–

☐ जूते ठीक करना ☐ बोतल बंद पानी बेचना

☐ मकान खरीदना ☐ ईंटें बनाना

(ग) इनमें से आर्थिक गतिविधि कौन-सी है–

☐ पिता का घर पर बेटी को पढ़ाना

☐ रिक्शे वाले का रिक्शे में सवारियों को ले जाना

☐ टेलीविजन देखना

☐ अपने घर के आस-पास की सफाई करना

(घ) इनमें से गैर आर्थिक गतिविधि कौन-सी है–

☐ सब्जी बेचना

☐ ट्रक में सामान की ढुलाई करना

☐ नर्स का अस्पताल में मरीज को दवा देना

☐ अंधे आदमी को सड़क पार कराना

2. हर प्राणी को जीवन जीने के लिए किन चीजों की जरूरत होती है?

....

3. आर्थिक जरूरतें क्या होती हैं?

....

4. कौन-सी इच्छा जरूरत कहलाती है?

....

....

5. वाक्य पूरे कीजिए–

(क) एक की जरूरत दूसरे का .... बनती है।

(ख) श्रम-विभाजन से समय की .... होती है।

(ग) जरूरतें दो तरह की होती हैं- .... और गैर आर्थिक।

(घ) इच्छाओं और जरूरतों में .... होता है।

(च) हमारी एक जरूरत से कितने ही लोगों का .... जुड़ा होता है।

6. बाजारवादी अर्थव्यवस्था का क्या अर्थ हैं?

....

....

....

....

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

15.1 1. (क) ✗

(ख) ✓

(ग) ✓

(घ) ✗

(च) ✓

2. (क) गैर आर्थिक

(ख) आर्थिक

(ग) गैर आर्थिक

(घ) गैर आर्थिक

(च) आर्थिक

15.2 1. (क) ✓

(ख) ✗

(ग) ✗

(घ) ✓

(च) ✗

15.3 1. (क) नियंत्रित

(ख) पूर्ति

(ग) मिश्रित

(घ) खरीदते

पाठांत प्रश्न

1. (क) टेलीविजन

   (ख) जूते ठीक करना

   (ग) रिक्शेवाले का रिक्शे में सवारियों को ले जाना

   (घ) अंधे आदमी को सड़क पार कराना

2. हवा, पानी और भोजन

3. जिनको पूरा करने के लिए हमें कीमत चुकानी पड़ती है।

4. जिस इच्छा को पूरा करने के लिए हमारे पास संसाधन हों और हम उन संसाधनों का इस्तेमाल भी करना चाहते हों, वह इच्छा, जरूरत कहलाती है।

5. (क) रोजगार

(ख) बचत

(ग) आर्थिक

(घ) अन्तर

(च) रोजगार

6. बाजारवादी अर्थव्यवस्था में बाजार पर सरकार का नियंत्रण नहीं होता। यह पूरी तरह मुक्त अर्थव्यवस्था है।

जाँचपत्र-1 (पाठ 11 से 15)

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(क) पश्चिम बंगाल में .... की वाणिज्यिक खेती होती है। (पटसन / कपास)

(ख) दूसरे उद्योगों के लिए कच्चा माल तैयार करने वाले उद्योग को .... उद्योग कहते हैं। (आधारभूत / उपभोक्ता)

(ग) सड़क परिवहन, रेल परिवहन से ज्यादा .... है। (नया / पुराना)

(घ) प्रसिद्ध अर्थशास्त्री .... ने जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत दिया। (माल्थस / एडम स्मिथ)

(च) .... परिवार में श्रम विभाजन देखने को मिलता है। (एकल / संयुक्त)

2. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर × का निशान लगाइए–

(क) जैविक खेती में कीटनाशक और रासायनिक खादों का प्रयोग नहीं होता है। ( )

(ख) चीनी उद्योग खनिज पर आधारित उद्योग है। ( )

(ग) सड़क मार्ग, रेलमार्ग की अपेक्षा सरल और कम खर्चीला होता है। ( )

(घ) जन्मदर बढ़ने और मृत्युदर घटने से जनसंख्या घटती है। ( )

(च) खेती करना प्राथमिक क्षेत्र में आता है। ( )

3. पहाड़ी ढलानों पर किस प्रकार की खेती की जाती है?

(क) एकल खेती (ख) मिश्रित खेती

(ग) सीढ़ीदार खेती (घ) इनमें से कोई नहीं

4. निम्न में से कौन सार्वजनिक क्षेत्र का उद्योग नहीं है।

(क) हिन्दुस्तान एरोनोटिक्स लिमिटेड (ख) बोकारो लोहा और इस्पात संयंत्र

(ग) भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (घ) एअरटेल

6. राष्ट्रीय राजमार्ग के अन्तर्गत स्वर्णिम चतुर्भुज योजना किस शहर को नहीं जोड़ती है?

(क) दिल्ली (ख) मुम्बई

(ग) चेन्नई (घ) लखनऊ

6. भारत में जनसंख्या नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम कब शुरू हुआ?

(क) 1962 ई. (ख) 1952 ई.

(ग) 1942 ई. (घ) 2000 ई.

7. इनमें से कौन-सी आर्थिक क्रिया नहीं है?

(क) डॉक्टर द्वारा मरीज का इलाज करना (ख) व्यक्ति द्वारा सब्जी बेचना

(ग) सुबह टहलना (घ) बढ़ई द्वारा खाट बनाकर बेचना

8. सही मिलान कीजिए–

(क)	रबी फसल	(i)	कागज उद्योग
(ख)	वन आधारित उद्योग	(ii)	गेहूँ
(ग)	जल परिवहन	(iii)	चीन
(घ)	उत्तर रेलवे मंडल का मुख्यालय	(iv)	नाव
(च)	सबसे अधिक आबादी वाला देश	(v)	नई दिल्ली

9. जनसंख्या अधिक होने से मानव जीवन पर पड़ने वाले चार प्रभावों को लिखिए।

....

....

....

....

10. श्रम विभाजन से होने वाले तीन फायदे कौन-से हैं, लिखिए।

....

....

....

उत्तरमाला

1. (क) पटसन (ख) आधारभूत (ग) पुराना
   (घ) माल्थस (च) संयुक्त
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓
   (घ) ✗ (च) ✓
3. सीढ़ीदार खेती
4. एअरटेल
5. लखनऊ
6. 1952 ई.
7. सुबह टहलना
8. (क) गेहूँ (ख) कागज उद्योग (ग) नाव
   (घ) नई दिल्ली (च) चीन
9. रोजगार के अवसर की कमी, नागरिक सुविधा में कमी, गंदी बस्ती का बढ़ना, अपराध में वृद्धि।
10. समय की बचत, काम का बोझ बँटना, अधिक लोगों को रोजगार मिलना, क्षमता का सही इस्तेमाल होना।

16

शासन-व्यवस्था के स्वरूप

अगर आपकी उम्र 18 वर्ष से ऊपर है, तो चुनाव में वोट डालने जरूर जाते होंगे। वोट डालकर हम अपना प्रतिनिधि चुनते हैं। चुने हुए प्रतिनिधि देश और प्रदेश की सरकार चलाते हैं। जिला, क्षेत्र और ग्राम पंचायत के चुनाव में भी हम वोट डालकर अपना प्रतिनिधि चुनते हैं। सरकार चलाने की इस प्रणाली को लोकतांत्रिक प्रणाली कहते हैं। लोकतंत्र को हम जनतंत्र या प्रजातंत्र के नाम से भी जानते हैं। इतिहास में शासन के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं, जैसे– राजतंत्र, तानाशाही, उपनिवेशवाद आदि। लोकतंत्र इन सभी शासन प्रणालियों से उत्तम माना जाता है। इस पाठ में हम इन सभी शासन प्रणालियों के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- सरकार क्या है और इसकी आवश्यकता क्यों है, को स्पष्ट कर सकेंगे;
- सरकार और शासन के प्रकार समझा सकेंगे;
- राजशाही तथा तानाशाही के गुण-दोषों का वर्णन कर सकेंगे;
- उपनिवेशवाद और उसके प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे और
- लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था तथा उसके गुण-दोषों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

16.1 सरकार की आवश्यकता

राज्य के चार अनिवार्य तत्त्वों में से प्रमुख तत्त्व– सरकार है। सरकार को ठीक से समझने के लिए पहले राज्य को समझना जरूरी है।

राज्य क्या है?

राज्य एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण संस्था है। आमतौर पर हमारे यहाँ राज्य को 'प्रदेश' के अर्थ में लिया जाता है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। भारत एक राज्य है, जबकि बिहार, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, मणिपुर आदि प्रदेश हैं या भारत राज्य की इकाइयाँ हैं, जिनसे मिलकर भारत राज्य बना है। राज्य कम या अधिक जनसंख्या वाला एक ऐसा समुदाय है, जो एक निश्चित भू–भाग पर रहता है, जिसकी अपनी एक सुसंगठित सरकार होती है और जो सम्प्रभु तथा स्वतंत्र होता है। इस प्रकार देखें तो राज्य के चार अनिवार्य तत्त्व होते हैं। आइए, इन तत्त्वों को विस्तार से समझें।

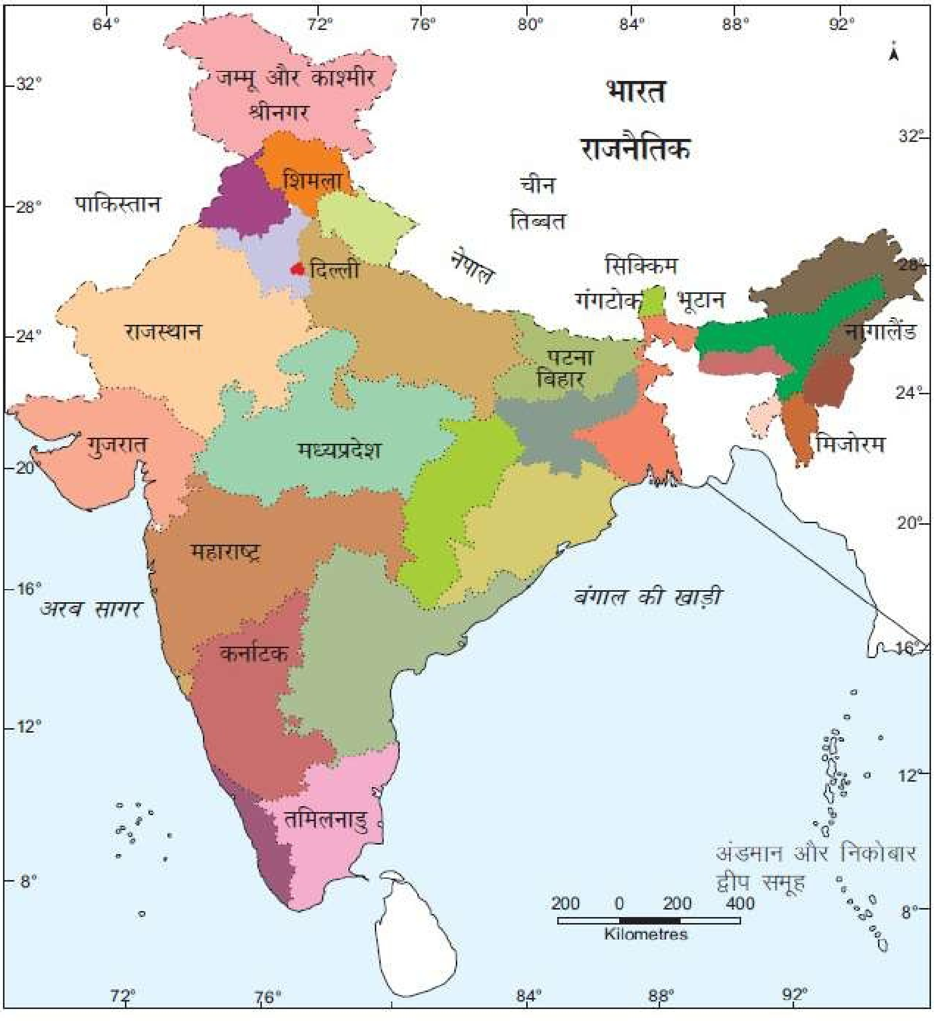

चित्र 16.1 : भारत का राजनैतिक मानचित्र

1. जनसंख्या

जनसंख्या राज्य का पहला आवश्यक तत्त्व है, अर्थात् राज्य में जनसंख्या का होना अनिवार्य है। जहाँ रहने वाले लोग ही न हों, उसे राज्य बिल्कुल नहीं कहा जा सकता। कम हो या अधिक, परन्तु जनसंख्या का होना जरूरी है।

2. निश्चित भू-भाग

निश्चित भू-भाग राज्य का दूसरा आवश्यक तत्त्व है। उसी भू-भाग अर्थात् भूमि पर राज्य की जनसंख्या निवास करती है और अपना जीवन-यापन करती है। भू-भाग कम हो या अधिक परन्तु इतना अवश्य हो, कि उस पर रहने वाली जनसंख्या का काम चल सके।

3. सरकार

सरकार राज्य का तीसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। राज्य अपनी शक्ति का उपयोग सरकार के माध्यम से ही करता है। राज्य की इच्छा भी सरकार के माध्यम से प्रकट होती है। सरकार के बिना राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती।

4. सम्प्रभुता

राज्य का चौथा प्रमुख तत्त्व सम्प्रभुता है। सम्प्रभुता का मतलब है राज्य की सरकार अंदर से शक्तिशाली और सर्वोच्च तथा बाहर से स्वतंत्र हो। उसके ऊपर किसी बाहरी राज्य अथवा शक्ति का नियंत्रण न हो। अन्य तीनों तत्त्वों के होते हुए भी अगर सम्प्रभुता नहीं है तो उसे राज्य नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के लिए, आजादी से पहले भारत को राज्य नहीं कहा जा सकता था क्योंकि उसके पास सम्प्रभुता नहीं थी, जबकि जनसंख्या, भू-भाग और सरकार तीनों तत्त्व मौजूद थे।

इस प्रकार, अनिवार्य चारों तत्त्वों के बिना कोई राज्य पूर्ण नहीं हो सकता। अब पुनः सरकार पर आते हैं– सरकार राज्य द्वारा गठित एक संस्था है। सरकार एक ऐसा यंत्र है, जिसके माध्यम से ही राज्य अपनी समस्त शक्तियों का उपयोग करता है। सरकार न हो तो राज्य की जनता असंगठित, अनियंत्रित और अराजक भीड़ की तरह हो जाएगी। न कोई कानून होगा, न कोई नियम, हर तरफ मनमानी होगी। अतः किसी भी राज्य के सुचारु संचालन, विकास, कानून-व्यवस्था, शांति, सुरक्षा और स्वतंत्रता के लिए सरकार का होना अति आवश्यक है।

सरकार के प्रकार

सरकार का जो स्वरूप आज आप देख रहे हैं, यह आजादी के बाद का है। आजादी के पहले या अंग्रेजी शासन के भी पहले हमारे देश में सरकार के अन्य प्रकार प्रचलन में रहे हैं। आज भी कुछ अन्य देशों में सरकार के दूसरे स्वरूप मौजूद हैं। यहाँ हम मुख्य रूप से चार प्रकार की शासन प्रणाली के बारे में पढ़ेंगे। ये शासन प्रणाली हैं– राजशाही, तानाशाही, उपनिवेशवाद और लोकतांत्रिक व्यवस्था।

पाठगत प्रश्न 16.1

1. राज्य के अनिवार्य तत्त्वों के नाम लिखिए–

....

2. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(क) आजादी के पहले भारत को राज्य नहीं कहा जा सकता था क्योंकि उसके पास ....नहीं थी। (सरकार / सम्प्रभुता / जनसंख्या)

(ख) सरकार राज्य द्वारा गठित एक .... है। (संस्था / समूह / कानून)

(ग) राज्य अपनी शक्ति का उपयोग .... के माध्यम से ही करता है। (अधिकार / जनसंख्या / सरकार)

16.2 राजशाही या राजतंत्र

राजशाही या राजतंत्र वह शासन प्रणाली है, जिसमें शासन की पूरी शक्ति एक ही व्यक्ति के हाथ में होती है। वह व्यक्ति राजा या सम्राट कहलाता है। कई राजाओं के नाम आपने भी सुने होंगे, जैसे– राजा दशरथ, विक्रमादित्य, महाराणा प्रताप, अकबर आदि। राजा का निर्धारण वंश परम्परा के अनुसार होता है। यह सबसे पुरानी शासन प्रणाली है। पहले सभी देशों में यही शासन प्रणाली प्रचलित थी। राजशाही शासन तंत्र की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

चित्र 16.2 : राजा व बादशाह

- एक ही व्यक्ति के हाथ में शासन होता है। वह हर तरह से पूर्ण शक्तिशाली होता है।
- वह व्यक्ति राजा या सम्राट कहलाता है।
- राजा राज्य की प्रजा को अपनी संतान की तरह मानता है।
- राजा कौन होगा, इसका निर्णय पीढ़ी दर पीढ़ी वंश परम्परा के अनुसार तय होता है।
- सभी लोग राजा की आज्ञा का पालन करते हैं।
- राजा का स्थान देवता के समान माना जाता है। उसकी आज्ञा का उल्लंघन करना पाप माना जाता है।

राजशाही शासन प्रणाली के गुण

हर शासन प्रणाली में कुछ अच्छाइयाँ और कुछ बुराइयाँ होती हैं। राजशाही शासन प्रणाली की कुछ अच्छाइयाँ इस प्रकार हैं–

- इसमें सत्ता एक ही व्यक्ति के हाथ में रहती है इसलिए राज्य की समस्याओं और नागरिकों के विवादों का निपटारा शीघ्र और आसानी से हो जाता है।
- जनता को यह पता रहता है कि उनका अगला राजा कौन होगा और इसके बाद उन्हें किसकी आज्ञा का पालन करना है।
- इस शासन प्रणाली में राजनैतिक दलों का संघर्ष और टकराव नहीं होता। अत: राजशाही सभी प्रकार के राजनीतिक विवादों से दूर रहती है।
- राजा ही राज्य की नीतियों और नियमों का निर्धारण करता है तथा उनका पालन कराता है इसलिए सभी नीतियाँ एवं नियम स्पष्ट होते हैं।
- राजा के ही हाथ में समस्त शक्तियाँ होती हैं। वह प्रजा को अपनी संतान की तरह मानता है। वह राज्य की अंदरूनी और बाहरी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखता है।
- कानून बनाने और उनका पालन कराने की जिम्मेदारी राजा पर ही होती है। अत: सभी को समान रूप से कानूनों का पालन करना पड़ता है। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता।
- राजा ही राज्य का सबसे बड़ा न्यायाधीश होता है इसलिए वह बिना किसी भेदभाव के कम समय में निष्पक्ष न्याय कर देता है।
- राज्य का विकास तेजी से होता है। पुराने समय में राजाओं द्वारा विद्यालयों, प्रशिक्षण केन्द्रों और बड़े-बड़े सुन्दर भवनों का निर्माण करवाया गया है। राजा संस्कृति के विकास का भी पूरा ध्यान रखते थे।
- राजशाही शासन प्रणाली में बगावत की संभावना बहुत कम होती है। राजा स्वयं गुप्तचर विभाग और सेनाओं का अध्यक्ष होता है। अत: वह बगावत को दबाने में सक्षम होता है।

- राजशाही शासन तंत्र में, प्राचीन काल के राजाओं ने कई रूढ़ियों और गलत परम्पराओं को समाप्त किया है। वह इसमें पूर्ण सक्षम होता है।
- जन कल्याण से जुड़ी योजनाएँ बनाने और उन्हें लागू कराने में देरी नहीं होती। वे बिना किसी विवाद के तुरन्त लागू हो जाती हैं।
- संकट काल में राजा अत्यधिक शक्तिशाली सिद्ध होता है। वह अपनी सूझ-बूझ और शक्तियों का इस्तेमाल करके संकटकालीन परिस्थितियों से अपने राज्य को उबार लेता है।

राजशाही शासन प्रणाली के दोष

जहाँ एक ओर इस शासन प्रणाली में अनेक गुण हैं, वहीं कुछ दोष भी हैं, जो इस प्रकार हैं–

- इस शासन प्रणाली में राजा को देवता की तरह माना जाता है। लोग उसकी पूजा करते हैं। उसके खिलाफ कुछ बोलना या आज्ञा का उल्लंघन करना पाप माना जाता है। अत: अयोग्य या अत्याचारी राजा भी सफलतापूर्वक शासन चलाते रहते हैं। कोई उनका विरोध नहीं करता।
- चूँकि राजा का पुत्र ही राजा होता है इसलिए वहाँ योग्यता का कोई मापदंड नहीं होता। राजा का पुत्र यदि अयोग्य है, तो भी वह राजा बनकर शासन करने लगता है।
- राजा पर किसी प्रकार का अंकुश नहीं रहता इसलिए निरंकुश होने का भय बना रहता है। अक्सर वे मनमाने ढंग से शासन चलाने लगते हैं। जनता उनका विरोध भी नहीं कर पाती।
- इस शासन प्रणाली में राजा जनता को प्रबुद्ध और जागरूक बनाने की दिशा में कोई कार्य नहीं करना चाहता क्योंकि उसे पता है कि वह अशिक्षित, अज्ञानी और कूप-मंडूक जनता पर अधिक आसानी से शासन कर सकता है। जनता जागरूक हो जाएगी तो वह अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाने लगेगी।

  आज लोकतंत्र व व्यक्ति-स्वतंत्रता का युग है। इस युग में राजशाही या राजतंत्रीय शासन प्रणाली उपयुक्त नहीं है।

पाठगत प्रश्न 16.2

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(क) राजतंत्र में शासन सत्ता की शक्ति एक ही .... के हाथ में होती है।
(मंत्री / व्यक्ति / विद्वान)

(ख) राजा ही राज्य का सबसे बड़ा .... होता है। (वकील / दरोगा / न्यायाधीश)

(ग) राजशाही शासन प्रणाली में .... की संभावना कम होती है।
(बगावत / स्वागत/ दावत)

(घ) राजा पर किसी प्रकार का .... नहीं रहता। (सुख / अंकुश / विश्वास)

(ङ) जनता .... हो जाएगी तो वह अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाने लगेगी। (भावुक / बेवकूफ / जागरूक)

6.3 तानाशाही शासन प्रणाली

जब कोई व्यक्ति सैनिक शक्ति अथवा दलीय आधार पर बलपूर्वक शासन सत्ता अपने हाथ में ले लेता है और निरंकुश होकर शासन करता है तो उसे तानाशाही शासन प्रणाली कहते हैं। इसे अधिनायक तंत्र भी कहा जाता है। इस तरह का शासन चलाने वाले को तानाशाह कहा जाता है। तानाशाह के रूप में हिटलर का नाम अक्सर लिया जाता है। तानाशाही शासन प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

चित्र 16.3 : तानाशाही का प्रतीक हिटलर

- अधिनायक तंत्र में शासक पर किसी का नियंत्रण नहीं रहता। शासक की इच्छा ही नियम और कानून बन जाते हैं।
- इस प्रणाली में राज्य की सुरक्षा ही प्रमुख होती है। प्रजा की इच्छा, भलाई और स्वतंत्रता का कोई महत्त्व नहीं होता। शासक अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए प्रजा के हितों का भी बलिदान कर देता है।
- इसमें तानाशाह की अनुमति के बिना किसी प्रकार के संघों अथवा संस्थाओं का निर्माण नहीं किया जा सकता। नागरिक किसी प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक अथवा आर्थिक संगठन भी नहीं बना सकते।

- नागरिकों को कठोर अनुशासन में रखा जाता है। अनुशासन भंग करने वाले को अत्यंत कठोर दंड दिया जाता है।
- अधिनायक तंत्र में एक ही दल का निरंकुश शासन होता है। दूसरे दलों को पनपने का मौका नहीं दिया जाता है।
- इसमें जनता के अधिकारों और स्वतंत्रता का कोई महत्त्व नहीं होता। किसी को अपना दल बनाने, प्रचार करने और भाषण देने की अनुमति नहीं होती। इसे अनुशासनहीनता माना जाता है।

तानाशाही या अधिनायक तंत्र के गुण

- तानाशाही शासन प्रणाली में तानाशाह की इच्छा ही सर्वोपरि होती है। अत: उसकी इच्छा होते ही सभी कार्य तेजी के साथ पूर्ण हो जाते हैं। वह शासन चलाने और अपने कार्य करने के लिए स्वतंत्र होता है।
- सभी नागरिकों को तानाशाह की इच्छा, आज्ञा और कानून का पालन करना पड़ता है। किसी के लिए अनुशासन और कानून तोड़ना आसान नहीं होता। इससे राष्ट्रीय एकता बनी रहती है।
- चूँकि तानाशाह सेना के बल पर शासन सत्ता पर कब्जा करता है, अत: वह बाहरी शक्तियों से अपने राज्य की सुरक्षा करने में सक्षम होता है।
- ऐसे शासन में दूसरे दलों का कोई अस्तित्त्व नहीं रहता। अत: राज्य राजनीतिक दलों की उठा-पटक से मुक्त रहता है।
- अधिनायक तंत्र में शासन की समस्त शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथों में होती हैं। अत: वह संकटकाल का सामना करने में सक्षम होता है।

तानाशाही या अधिनायकतंत्र के दोष

- तानाशाह सैनिक बल से सत्ता स्थापित करता है, अत: एक कुशल सेनापति की तरह उसमें सेना को नियंत्रित और अनुशासित रखने की कुशलता होना जरूरी है। यदि वह इसमें कमजोर पड़ता है तो राज्य में अराजकता की स्थिति पैदा हो सकती है।
- इसमें जनता के हितों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है, अत: जनता के सामाजिक, बौद्धिक और आर्थिक विकास की गति बहुत धीमी होती है।
- इस प्रणाली में शासक द्वारा राज्य का अधिकांश धन राज्य की सुरक्षा और सैन्य बल पर ही खर्च कर दिया जाता है। जनता के हितों और जरूरतों की अनदेखी होती है।
- तानाशाही शासन प्रणाली में जनता के पास किसी तरह के मौलिक अधिकार नहीं होते, न ही नागरिकों को किसी प्रकार की कोई स्वतंत्रता होती है। पूरी जनता तानाशाह के इशारों पर काम करने के लिए मजबूर होती है।

- इस तरह इसके गुणों और दोषों पर विचार करने से पता चलता है कि यह प्रणाली जनता और समाज के हित में नहीं है। अतः आज के युग में तानाशाही या अधिनायक तंत्र को उपयुक्त नहीं माना जा सकता।

पाठगत प्रश्न 16.3

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(सेना, अनदेखी, दलों, नियंत्रण, सर्वोपरि)

(क) अधिनायकतंत्र में शासक पर किसी का .... नहीं रहता।

(ख) अधिनायकतंत्र में दूसरे .... को पनपने का मौका नहीं मिलता।

(ग) तानाशाह की इच्छा .... होती है।

(घ) तानाशाह .... के बल पर सत्ता स्थापित करता है।

(च) अधिनायकतंत्र में जनता के हितों और जरूरतों की .... होती हैं।

16.4 उपनिवेशवाद

जब किसी राष्ट्र के कुछ लोग अपने से कमजोर किसी दूसरे देश पर कब्जा कर लेते हैं और वहाँ की सारी व्यवस्थाओं को अपने हिसाब से अपने हितों की पूर्ति के लिए चलाने लगते हैं, तो उसे 'उपनिवेशवाद' कहा जाता है। जिस देश की भूमि पर दूसरे राष्ट्र द्वारा कब्जा किया जाता है, वह उसका उपनिवेश कहलाता है। उदाहरण के लिए भारत ब्रिटेन का उपनिवेश रह चुका है।

प्रारम्भ में अंग्रेज, ईस्ट इंडिया कम्पनी के रूप में भारत में व्यापार करने आए थे। व्यापार की सुविधा के लिए उस समय मुगल सम्राट जहाँगीर ने सूरत में कम्पनी को फैक्ट्री बनाने की अनुमति दे दी। उसके बाद धीरे-धीरे कम्पनी ने आगरा, अहमदाबाद, भड़ौच तथा हुगली में भी अपनी फैक्ट्रियाँ बना लीं। भारत आर्थिक रूप से काफी सम्पन्न था। कम्पनी ने यहाँ की धन-सम्पदा का शोषण करने के उद्देश्य से अपना प्रभुत्व बढ़ाना शुरू कर दिया। वे अपने प्रयासों में सफल भी हो गए। भारत अंग्रेजों का उपनिवेश बन गया। उन्होंने यहाँ के उद्यमियों, कारीगरों, किसानों का खूब शोषण किया। शोषण करने और अधिक से अधिक धन लूटकर ब्रिटेन भेजने के उद्देश्य से उन्होंने यहाँ की संस्कृति को तहस-नहस करना शुरू कर दिया। अंग्रेजों ने अपनी नीतियों से भारतीय लोगों के मन में यह बिठाना शुरू कर दिया कि जो कुछ भारतीय है, वह पुराना है, बेकार है, दकियानूसी है और पिछड़ा हुआ है। उन्होंने लोगों को पश्चिमी जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया।

अंग्रेजों ने ब्रिटिश उपनिवेश की जड़ों को और अधिक मजबूत करने के लिए यहाँ के लोगों में फूट डालने और आपस में लड़ाने की नीति भी अपनाई। 'फूट डालो और राज करो' की नीति ने भारत को लगातार कमजोर किया। शोषण और लूट के साथ-साथ अंग्रेजों ने भारतीय जनता पर खूब अत्याचार भी किए। धीरे-धीरे शोषण, अत्याचार, बदहाली और गुलामी से मुक्त होने के लिए भारतीय जनता छटपटाने लगी। लोगों में विरोध के स्वर उभरने लगे। इसी विरोध ने आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को जन्म दिया। संघर्ष का दौर शुरू हुआ और लम्बे संघर्ष के बाद 15 अगस्त, सन् 1947 को भारत अंग्रेजी शासन से आजाद हुआ।

पाठगत प्रश्न 16.4

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(क) भारत ब्रिटेन का .... रह चुका है। (अवशेष / विशेष / उपनिवेश)

(ख) प्रारम्भ में ईस्ट इंडिया कम्पनी भारत में .... करने आई थी। (लूटमार / व्यापार / उद्धार)

(ग) अंग्रेजों ने यहाँ की .... को तहस-नहस करना शुरू कर दिया। (संस्कृति / प्रकृति / आकृति)

(घ) 'फूट डालो और राज करो' की नीति ने भारत को लगातार .... किया। (मजबूत / बेजोड़ / कमजोर)

16.5 लोकतांत्रिक व्यवस्था

लोकतंत्र को जनतंत्र या प्रजातंत्र भी कहते हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था में शासन जनता के हाथ में होता है। जनता अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन चलाती है। इस तरह लोकतंत्र जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

- लोकतंत्र में शासन की शक्ति जनता के पास होती है। जनता चुनाव में वोट देकर अपने प्रतिनिधि चुनती है। जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि शासन चलाते हैं।
- लोकतंत्र में अप्रत्यक्ष रूप से शासन का संचालन जनता द्वारा ही किया जाता है इसलिए ऐसी सरकार को जनता की सरकार कहा जाता है।
- भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रतिनिधि चुनने के लिए 18 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके हर नागरिक को मतदान का अधिकार है। उसका वोट गुप्त रखा जाता है।

- लोकतांत्रिक व्यवस्था में राज्य में कई राजनीतिक दल सक्रिय होते हैं। ये राजनीतिक दल अपने-अपने प्रतिनिधियों को चुनाव में खड़ा करते हैं। चुनाव के बाद जिस दल को बहुमत प्राप्त होता है, उसी की सरकार बनती है।
- लोकतंत्र में जनता को समानता और स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त होता है। उसे कई अन्य मौलिक अधिकार भी प्रदान किए जाते हैं।
- लोकतंत्र में सभी नागरिकों के लिए समान कानून बनाए जाते हैं। सभी को न्याय पाने का अधिकार है।
- जनता को यह अधिकार प्राप्त है कि वह अगले चुनाव में पहले वाले प्रतिनिधियों को हटाकर दूसरे प्रतिनिधियों को चुन सकती है।
- लोकतंत्र में जनता का हित सर्वोपरि है। सरकारी योजनाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं में राज्य के विकास और जनता के हित को प्रमुखता दी जाती है।
- लोकतंत्र में शक्तियों का विकेन्द्रीकरण पाया जाता है। भारत की संघीय शासन-व्यवस्था में केन्द्र स्तर पर केन्द्र सरकार और प्रदेश स्तर पर राज्य सरकार शासन चलाती है। स्थानीय स्तर पर त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था है। इसमें ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत का गठन होता है, जो स्थानीय सरकार के रूप में काम करती हैं। शहरी क्षेत्रों में नगर निगम और नगरपालिका स्थानीय शासन सँभालती हैं।

लोकतांत्रिक व्यवस्था के गुण

- लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में सभी नागरिकों को विकास और उन्नति के समान अवसर मिलते हैं। अतः सभी क्षेत्रों में विकास का कार्य तेजी से होता है।
- इस व्यवस्था में जनता को स्वतंत्रता और समानता का अधिकार प्राप्त होता है। सबके लिए समान कानून और न्याय-व्यवस्था है। अतः नागरिकों को शोषण से बचाने की व्यवस्था होती है। किसी के साथ ज्यादती होने पर वह न्यायालय से न्याय पा सकता है।
- लोकतांत्रिक व्यवस्था में सभी के लिए समानता, स्वतंत्रता और न्याय का प्रावधान होता है।
- चूँकि इसमें जनता द्वारा चुनी हुई सरकार शासन चलाती है, अतः बगावत अथवा क्रांति की सम्भावना नहीं होती है। सत्ता का हस्तांतरण शान्तिपूर्ण ढंग से चुनाव के द्वारा होता है।
- लोकतंत्र में सरकार चलाने वाले निरंकुश नहीं हो सकते। यदि कोई प्रतिनिधि ऐसा करता है तो अगले चुनाव में जनता उसे हटा सकती है। अतः मनमानी और निरंकुशता की गुंजाइश बहुत कम होती है।
- इस प्रणाली में जनता को प्रशासनिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के समान अवसर प्राप्त होते हैं। अतः जनता राष्ट्रीय, सामाजिक तथा राजनीतिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक बनती है।